जैन गजट को शीघ्र आवश्यकता है

1895 से प्रकाशित हो रहे जैन समाज के सर्वाधिक प्रसार संख्या वाले जैन गजट साप्ताहिक के सदस्य बनाने, विज्ञापन बुक करने एवं जैन समाज के धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों के समाचार भेजने हेतु देश भर में जगह जगह संवाददाताओं की शीघ्र आवश्यकता है। आकर्षक कमीशन एवं अन्य लाभ योग्यतानुसार। आवेदन जैन गजट के वाट्सऐप नं. 7505102419 या 9415108233 पर भेजिये। आवेदन प्राप्त होने पर आपसे संपर्क किया जावेगा।

संपर्क - जैन गजट, ऐश बाग, लखनऊ,
मो. 9415008344, 7607921391, 7505102419,
Email- jaingazette2@gmail.com
www.jaingazette.com

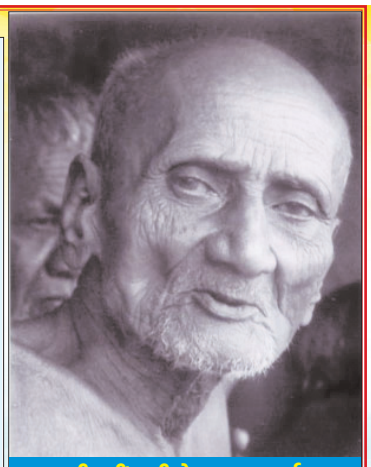

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

दिल्ली कृष्णा नगर में आचार्य विमर्श सागर के वर्षायोग की पूर्ण संभावना 12

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 30 अंक 31 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 10 जून 2024, वीर नि. संवत् 2550

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

जिससे मृत्यु की मृत्यु हो जाये ऐसी मृत्यु ही समाधिमरण है

आचार्य श्री समयसागर महाराज

कुण्डलपुर (दमोह), 6 जून। जिस मृत्यु से मृत्यु की मृत्यु हो जाये वही मृत्यु समाधिमरण है, अभिनव आचार्य श्री समयसागर महाराज ने आचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज के समाधिमरण दिवस पर आयोजित धर्मसभा में जनसभा को संबोधित करते हुए मृत्यु और मुक्ति और मृत्यु से मुक्ति के गहन ज्ञान से श्रोताओं को सरल व्याख्या करते हुए बोध कराया। मध्यप्रदेश के दमोह जिला के सिद्ध क्षेत्र कुण्डलपुर में आचार्य श्री समयसागर महाराज ने समझाया कि महापुरुषों के शब्द का अर्थ ज्ञात न भी हो तो उनके शब्दों की तरंगें शुद्धि में उपयोगी होती हैं। बाल्यकाल में हमने आचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज की वाणी का श्रवण किया, हम अल्पायु में थे अर्थ नहीं समझते थे। आचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज मारवाड़ी भाषा में प्रवचन देते थे और हमें मारवाड़ी तो क्या हिंदी भाषा का भी ज्ञान न था, मगर उनके शब्द कानों के मार्ग से होते हुए अंतरंग तक पहुंच गये। हमें नवकार मंत्र का पाठ तत्समय में हमारे अग्र भ्राता जो कि संसार में संत शिरोमणि हुए आचार्य श्री विद्यासागर महाराज ने हमें पढ़ाया, ये हमारा सौभाग्य था कि हमारा ऐसे कुल में जन्म हुआ था।

श्रोताओं को संबोधित करते हुए आचार्य श्री समयसागर महाराज ने बताया कि यथाजात लिंग करण नहीं उपकरण है। जैसे दृश्य को स्पष्ट देखने के लिए नयन पर उपनयन सहायक है, ऐसे ही यथाजात लिंग मोक्ष मार्ग की साधना में उपकरण है। यथाजात लिंगी ही अनावृत महाव्रती है। आवरण का एक धागा भी तीर्थंकरत्व में बाधक है। यथाजात भाव लिंगीं ही तीर्थंकर पद का धारक होता है। यथाजात भाव लिंगी रूप, स्वरूप की अनुभूति कर सिद्ध स्वरूपी मुक्ति पाता है/पा सकता है।

आपने यम और नियम का अंतर समझाते हुए कहा कि अंतिम श्वास तक संकल्प के साथ व्रत का पालन करना यम है और व्रतों का सावधि संकल्प के साथ व्रत का पालन करना नियम है। दिगम्बर मुनि सल्लेखना समाधिमरण के लिये यम नियम के साथ साधना करता है, जीवन व्यतीत करता है। जिससे मृत्यु की भी मृत्यु हो जाये ऐसी मृत्यु ही समाधिमरण है। जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु होगी ये सुनिश्चित है, किंतु जिसका मरण हो उसका पुनः जन्म हो ये नियम नहीं है। समाधिमरण कर मृत्यु की जिसने मृत्यु कर ली हो उसका पुनः जन्म नहीं होगा और वह जन्म मरण से मुक्त है उसने मुक्ति पा ली है।

आपने कहा कि हितमितप्रिय वाणी के के साथ निज आत्मा का कल्याण करते हुए पर कल्याण के भाव रखना सोलहकारण भावना का भाव है। आज आचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज के समाधिमरण मृत्यु महोत्सव के दिवस यही भावना भाता हूं जैसा उन्होंने कल्याण किया ऐसा ही हमारा, जो मेरे साथ बैठे हैं और जो सामने हैं सबका कल्याण हो।

धर्मसभा को निर्यापक श्रमण श्री योगसागर महाराज, निर्यापक श्रमण श्री नियमसागर महाराज, निर्यापक श्रमण श्री अभयसागर महाराज ने भी संबोधित किया।

– वेदचन्द जैन, गौरेला

WONDERFUL 12 Nights / 13 Days
EUROPE
20 Sep, 3 Oct, 3 Nov
यूरोप जैन मंदिर के दर्शन
FRANCE, PARIS, ITALY
AUSTRIA, AMSTERDAM
GERMANY, SWITZERLAND
VAYUDOOT WORLD TRAVELS PVT. LTD.
100% Pure Vegetarian Jain Food
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056
Email : vayudoottravels@gmail.com • Website: www.vayudoottravels.in

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

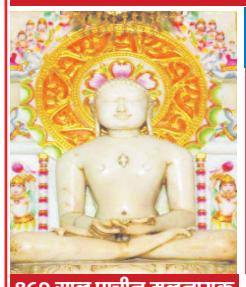
869 साल प्राचीन मूलनायक
श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण
LIVE
आरती : 7:15 - 7:45 AM
शांतिधारा : 8:30 AM
@jainmandirhasteda
नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9783016885

हस्तेड़ा जैन मंदिर दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
संपर्क सूत्र:
नितिन कुमार पाटनी (मंत्री) 9001255955
मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष) 095880-20330

नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।

JK MASALE SINCE 1957
Buy online on jkcart.com

– Breakfast Matlab –
JK POHA
Shudh Khao Swasth Raho...

23 years of Educational Excellence

TMU

TEERTHANKER MAHAVEER UNIVERSITY
Moradabad

Accredited with NAAC A Grade

12-B Status from UGC

ADMISSIONS OPEN 2024-25

NAAC GRADE A — ACCREDITED UNIVERSITY

SCAN HERE TO APPLY

Apply Online www.tmu.ac.in

NBA — National Board of Accreditation. The National Board of Accreditation accredited B.Tech. Computer Science & Engineering programme of Faculty of Engineering

UGC — Approved under Section 2(f) & 12(B) of the UGC Act, 1956

1st TOP PRIVATE MBBS UNIVERSITY IN UP IN THE IIRF RANKINGS 2023

4 ★ HIGHEST RATING — INSTITUTION INNOVATION COUNCIL (IIC) — Innovation Cell, Ministry of Education Govt. of India

4th RANK OF PHARMACY COLLEGE IN UP BY IIRF 2023

RECOGNISED AS INDIA'S 4th TOP UNIVERSITY IN FILING THE MAXIMUM NO. OF PATENTS — Department for Promotion of Industry and Internal Trade, Ministry of Commerce & Industry, Government of India

SECURED THE 19th SPOT AMONG INDIA'S TOP 40 PRIVATE UNIVERSITIES AS PER THE TIMES B SCHOOL RANKINGS 2024

DIPLOMA | UG | PG | PhD PROGRAMMES OFFERED

MEDICAL
- MBBS • MD • MS (All Specializations) (Admissions through UP NEET Counseling)

B.Sc. (Medical)
- Anatomy • Physiology • Biochemistry

M.Sc. (Medical)
- Anatomy • Physiology • Biochemistry
- Pharmacology • Microbiology

DENTAL
- BDS • MDS (All Specializations) (Admissions through UP NEET Counselling)

NURSING
- ANM • GNM • PB B.Sc. Nursing
- B.Sc. Nursing
- M.Sc. Nursing (All Specializations)

PARAMEDICAL SCIENCES
APPROVED BY U.P. STATE MEDICAL FACULTY, LUCKNOW (EXCEPT FORENSIC SCIENCE)
- DXRT • BRIT • MRIT (For X-Ray/ CT Scan / MRI)
- DMLT • BMLT • MMLT (For Blood Testing Lab)
- D.Optom • B.Optom
- M.Optom (For Eye Testing Lab)
- B.Sc. & M.Sc. (Forensic Science)

JOB ORIENTED DIPLOMA PROGRAMMES -
- Blood Transfusion • C.T. Scan • O.T.
- Emergency & Trauma Care • M.R.I.
- Cardiology • Dialysis
- Anesthesia & Critical Care
- Orthopaedic & Plaster • Neonatal Care
- Audio & Speech Therapy
- Intervention Radiology

PHYSIOTHERAPY
- BPT
- MPT • Obs. & Gyn • Orthopaedics • Sports • Neurosciences • Cardiopulmonary • Paediatrics

PHARMACY
- Pharm.D. (Doctor of Pharmacy)
- Pharm.D. (Post Baccalaureate)
- D.Pharm. • B.Pharm.
- B.Pharm. (2nd Yr Lateral Entry)
- M.Pharm. (Pharmacology/Pharmaceutics) Pharmacognosy, Pharmaceutical Analysis)

Rs. 5000/- per month will be given as stipend

COMPUTING SCIENCES & IT
AICTE Approved
- B.Tech. Computer Science and Engineering
- B.Tech. (CSE) 2nd Year Lateral Entry
- B.Tech. (CSE) Specialization in Artificial Intelligence, Machine Learning & Deep Learning
- B.Tech. 2nd Year Lateral Entry (CSE) Specialization in Artificial Intelligence, Machine Learning & Deep Learning
- B.Tech. (CSE) in Data Science
- B.Tech. (CSE) in Cloud Technology & Information Security
- B.Tech. (CSE) in Cyber Security
- M.Tech. (CSE) in All Specializations
- B.Sc. Animation
- B.Sc. Computer Science
- B.Sc. (Hons. with Research)* - 4 yrs Computer Science

Collaboration with aivancity, France*
- M.Sc. • Artificial Intelligence • Data Science*
- BCA
- BCA -Cloud Technology & Information Security -Mobile Application & Web Technology
- BCA (Hons. with Research)* - 4 yrs
- MCA in All Specializations

Collaboration with IBM
- B.Tech. (CSE) Application Development using Cloud and Analytics Platforms

Collaboration with TCS iON
- B.Tech. (CSE) in Data Science

FACULTY OF ENGINEERING
AICTE Approved
- B.Tech. -Computer Science & Engineering
  - Computer & Communication Engineering*
  - Electronics & Communication Engineering
  - Electrical Engineering • Mechanical Engineering
  - Civil Engineering
- B.Tech. 2nd year Lateral Entry (after Diploma/B.Sc.)
- M.Tech. -Machine Learning & Data Sciences -Electrical Power & Energy System* -Additive Manufacturing* -Structural and Construction Engineering*

Collaboration with TCS iON
- B.Tech. LC specialization in IoT
- B.Tech. ML specialization in Mechatronics

MANAGEMENT & COMMERCE
- BBA - HR, Finance, Marketing, IB
- BBA - Data Analytics
- BBA - International Business and Entrepreneurship
- BBA (Hons. with Research)* - 4 yrs
- B.Com. (Pass)
- B.Com. (Hons. with Research)* - 4 yrs
- MBA - Marketing, HR, IB, Finance, Agri. Business
- MBA - Industry Integrated with Global Exposure
- MBA - Hospital Management

Collaboration with WHIZHACK
- B.Com. - Fintech & Blockchain Technologies
- MBA - Cyber Security

LAW
5 Years Integrated Programmes
- BA-LL.B. (Hons.) • BBA-LL.B. (Hons.)
- B.Com.-LL.B. (Hons.) • LL.M.

PHYSICAL EDUCATION
- B.P.Ed. • M.P.Ed.
- B.P.E.S (Bachelor of Physical Education & Sports)
- B.P.E.S with Research

AGRICULTURE SCIENCES
ICAR ACCREDITED
- B.Sc. (Hons.) - Agriculture
- M.Sc. - • Agronomy • Soil Science • Plant Pathology

EDUCATION
- B.Sc.-B.Ed. (4 yrs.Integrated)
- B.A.-B.Ed. (4 yrs.Integrated)
- B.El.Ed.
- B.Ed. • M.Ed. • D.El.Ed. (BTC)

FINE ARTS
- BFA • MFA

SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
- B.A. (Hons. with Research)* - 4 yrs English, Economics, Psychology,
- BLIS • MLIS

Ph.D. in various disciplines
The University offers a research fellowship of Rs. 25,000 per month for all disciplines except Medical, where it is Rs. 30,000 per month.

RANKED AMONG INDIA'S TOP 50 B-SCHOOLS AS PER THE TIMES B-SCHOOL RANKINGS 2024

Band 50-100 2023 Innovation — nirf NATIONAL INSTITUTIONAL RANKING FRAME WORK

GREEN RANKINGS-2024 DIAMOND BAND WITH GRADE A+ — World Institutional RANKING

GRADE IN OUTCOME BASED EDUCATION (OBE) RANKINGS 2023 GOLD BAND WITH GRADE A — World Institutional RANKING

NURSING & PARAMEDICAL COLLEGE GRADE A BY QCI

For the complete list of programmes offered visit : www.tmu.ac.in

Admission Toll Free No. - 1800-270-1490 9258112544

Email : admission@tmu.ac.in, admissions@tmu.ac.in

Campus Admission Office : NH-09, DELHI ROAD, MORADABAD (U.P.)

Note :- In case of no response from any above mentioned numbers, please contact -7060608828, 9837848862

DISTANCE EDUCATION PROGRAMMES
Programmes Offered
- BBA • B.Com • M.Com • MA (Economics)

Website : www.cdoe.tmu.ac.in

Email : admission.cdoe@tmu.ac.in, Contact : 95209-42111, 95209-32111

TMU, PNB A/C # -3942002100004339 IFSC Code - PUNB0394200

Education Loan — punjab national bank

विगत 9 सत्रों मे विश्वविद्यालय द्वारा अपने श्रोत से Rs. 65 करोड़ से अधिक की छात्रवृत्ति 3000 से अधिक जैन छात्र-छात्राओं को दी जा चुकी है।

जैन छात्र-छात्राओं के लिए कैम्पस में जैन जिनालय तथा छात्रावास में सूर्यास्त से पहले भोजन की व्यवस्था है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...
SANTOSH JAIN & ASSOCIATEL
SWATI VINIMAY & CONSULTAN PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.

OFFICE
CITY TRADE CENTER,
PNB Building, 4th Floor, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 99574-97927

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

44 डिग्री तापमान में 400 युवाओं ने सीखा करणानुयोग का ग्रंथ लब्धिसार

ए. सी., कूलर के बिना 8 घण्टे सीखने की ललक

राजेन्द्र जैन 'महावीर', वीरेन्द्र जैन 'वीरु'

इन्दौर। यूं तो इन्दौर अपनी कई विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है, इन्दौर की इस प्रसिद्धि में एक नाम आध्यात्मिक ऊर्जा में भी जुड़ रहा है। विगत कई वर्षों से छाबड़ा परिवार की धार्मिक पहचान अब इन्दौर की पहचान बन रही है। अमेरिका में माइक्रोसाफ्ट कंपनी को छोड़कर मात्र 30-35 वर्ष की उम्र में भारत आए दो युवा दंपत्ति विकास-सारिका छाबड़ा, प्रकाश-पूजा छाबड़ा ने स्व-पर कल्याण का बीजारोपण इन्दौर की भूमि पर किया है। वह यहाँ की सुगंध को सर्वव्यापी बना रहा है। धर्म क्या होता है इसे कैसे समझें, प्रथमानुयोग करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग क्या होते है, श्रावक के कर्तव्य क्या है, हमें अपने जीवन में क्या करना चाहिये? इन अनेक प्रश्नों का समाधान ये दो युवा दम्पत्ति अत्याधुनिक तकनीक के साथ आधुनिक ज्ञान विज्ञान के परिपेक्ष्य में प्रदान कर जैन दर्शन की अभूतपूर्व सेवा कर रहे है।

25 मई से 2 जून 2024 तक मोदीजी की नशिया बड़ा गणपति इन्दौर में जो हुआ वह 'भूतो न भविष्यति' है। करणानुयोग जैसे महान विषय जिसे समझना जीवन में उतारना बड़ा कठिन होता है इस विषय के विद्वान भी अंगुलियों में गिनने जितने ही है। उन सबके बीच हम सब कहते हैं युवा धर्म सुनने नहीं आते, इन सब मिथक को तोड़ा है छाबड़ा परिवार ने। भीषण गर्मी के दौर में आप और हम ए.सी., कूलर से बाहर नहीं निकल पा रहे थे उस दौर में संपूर्ण देशभर के 400 युवा जिसमें 200 इन्दौर से बाहर के थे ने अपना स्वप्रेरित रजिस्ट्रेशन कराया और 42 से 44 डिग्री तापमान के बीच लोहे के चद्दर डले हाल में बिना कूलर, ए.सी. के 6 से 8 घण्टे तक करणानुयोग जैसा कठिन विषय सुना, ग्रहण किया और फिर अपना होमवर्क भी किया, यह सुनने में आश्चर्यजनक लगता है। आचार्य नेमिचंद्र के अद्भुत ग्रंथ लब्धिसार को पढ़ाया पं. विकास-सारिका छाबड़ा ने। संपूर्ण संयोजन किया श्री विमलचंदजी छाबड़ा ने और अद्भुत शिविर चला जिसमें युवाओं ने धर्म के सार को जाना वह लिखना मेरे वश में नहीं है। सभी शिविरार्थियों को शुद्ध मर्यादित भोजन, केवल प्रवचन ही नहीं आचरण पर भी पूरा ध्यान रखा गया। शुद्ध मर्यादित दूध से भोजन तक सोले का भोजन उत्कृष्ट भावना के साथ अत्यंत सुस्वादु कराया गया। अत्यंत सुव्यवस्थित तरीके से समस्त आयोजन की संयोजना शिविरार्थियों के अनुभव सुनकर महसूस की जा सकती है। जब आठ वर्ष के बच्चे प्राकृत की गाथाओं का सस्वर पाठ करते नजर आते है तो लगता है कि यह शिविर अपनी सुगंध को कई पीढ़ियों तक महकायेगा। उल्लेखनीय है कि पं. विकास छाबड़ा द्वारा श्रमणाचार्य विशुद्धसागरजी महाराज से प्रतिमाधारी है। अनेक साधू संतों को भी आप करणानुयोग के गुढ़ विषय का ज्ञान करा रहे है। जैन दर्शन के वरिष्ठ मनीषी निस्पृही विद्वान पं. रतनलालजी जैन, समवशरण मंदिर इन्दौर ने उक्त शिविर में सम्मिलित होकर अपना मार्गदर्शन प्रदान किया। शिविर के संपूर्ण वीडियो जैन कोष यू-ट्यूब पर उपलब्ध है। पं. प्रकाश-पूजा छाबड़ा ने गोम्मटसार जीव काण्ड को रेखा चित्र व तालिकाओं में उपलब्ध कराया है जो करणानुयोग को समझने के लिए वर्तमान समय में सरलतम पुस्तक है। यंग जैन स्टडी ग्रुप, श्री विमलचंद माणकचंदजी छाबड़ा पारमार्थिक न्यास गांधीनगर इन्दौर के द्वारा आयोजित शिविर सफलता के साथ अपनी उत्कृष्टता के लिए जाना जाता है। विगत कई वर्षों से जैन दर्शन के उन्नयन में लगे छाबड़ा परिवार को इस शिविर का संपूर्ण श्रेय जाता है। धन्य है कि अपनी द्रव्य, उत्कृष्ट भावना तन-मन-धन की ऊर्जा के साथ केवल धर्म का कार्य करने वाले समाजजन इस पंचमकाल में भी उपलब्ध हैं।

इंदोर शहर के सभी मंदिर एवं श्रावक श्रेष्ठीजन के लिए उपयोगी सूचना

इन्दौर (टी. के. वेद)। श्रुत पंचमी के पावन अवसर पर श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन श्रुत संवर्धिनी महासभा मध्य प्रदेश द्वारा आपके पास उपलब्ध जिनवाणी की किताब यदि जीर्ण शीर्ण अवस्था में है तो आप उस जिनवाणी को हमें दीजिए, हम उस जिनवाणी में जिल्द लगाकर उसे पढ़ने योग्य बनाकर आपको वापस देंगे। आपको आपका मोबाइल नंबर हमें देना है, जीर्ण-शीर्ण अवस्था में जिनवाणी को हम आपके बताए हुए स्थान से एकत्रित कर लेंगे, पश्चात जिनवाणी की किताब को व्यवस्थित करके एवं जिल्द लगाकर आपको वापस कर देंगे। जिनवाणी कहां से एकत्रित करना है आप हमें इस नंबर पर बता देवें। - श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन श्रुत संवर्धिनी महासभा मध्यप्रदेश- (अध्यक्ष) इन्द्रकुमार वीणा सेठी, संपर्क - मुकेश पांड्या मो. 8889345711

आचार्यश्री सुनील सागर जी महाराज अनमोल वाणी (सन्मतिसुनीलम)

जैन गजट में 1 वर्ष तक प्रकाशित होगी जैसे आचार्य भद्रबाहू सागर जी महाराज, आचार्य सौरभ सागर जी महाराज की व आचार्य प्रमुख सागर जी महाराज की वाणी प्रकाशित हो रही है वैसे ही होगी, पूरे भारत में आचार्य सुनिल सागर जी महाराज के 12 भक्तो को ही यह सौभाग्य प्राप्त होगा पहले आओ, पहले पाओ, जैन गजट के माध्यम से आचार्य श्री का आत्मीय आशीर्वाद उन भक्तो को प्राप्त होगा। नमन्कर्ता का उनका नाम एक वर्ष तक प्रकाशित होगा इसका शुल्क प्रति सदस्य पांच हजार रूपया है। नमनकर्ता बनने हेतु संपर्क करें। **श्री शेखर चंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट R.K. Advertising मंदनगंज किशनगढ़ राज. मो. नं. 9667168267**

सन्मतिसुनीलम

जिंदगी उसी को आजमाती है,
जो हर मोड पर चलना जानता है।
कुछ पाकर तो हर कोई मुस्कुराता है,
जिंदगी उसी की होती है जो
खोकर भी मुस्कुराता है।

प्राकृत ज्ञान केसरी, चर्या चक्रवर्ती, महासंघ नायक, विश्वहितकारी, वात्सल्य मूर्ति सरल स्वभावी, चारित्र रत्नाकर, विद्यावारिधि, क्षेत्र जीर्णोद्धारक आचार्य श्री
सुनील सागर जी महाराज के चरणों में शत शत नमन, वंदन।

-: नमनकर्ता :-

जम्बूप्रसाद अध्यक्ष तीर्थक्षेत्र कमेटी गाजियाबाद	विमल कुमार बड़जात्या, किशनगढ़
राजकुमार बड़जात्या (मरवावाले)	कमल कुमार वेद (ज्वैलर्स)
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज की ग्रीष्मकालीन वाचना मदनगंज-किशनगढ़ में चल रही है।

संकलन: R. K. Advertising शेखर पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट
मो - 09667168267 email: rkpatni777@gmail.com

परम पूज्य वात्सल्य वारिधि, जिन धर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज एवं समस्त मुनि संघ के चरणों में

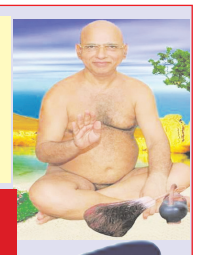

शत् शत् नमन, शत् शत् वंदन

नमनकर्ता: राजेन्द्र कुमार जैन/भागचन्द्र जैन एवं समस्त छाबड़ा परिवार

'Manik Ratan Bldg', By lane Kamal Patrol Pump, H. B. Road, Machkhowa, Guwahati - 781009 Cell : 919435111035

Jain Group

प्रसिद्ध समाजसेवी संजय पापड़ीवाल जैन गुरुकुल संस्था के बने संरक्षक

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

परम पूज्य वात्सल्य वारिधि आचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज के पावन आशीर्वाद एवं प्रेरणा से संजय कुमार, पुनीत कुमार पापड़ीवाल नगर वालों ने श्री शान्तिवीर जैन गुरुकुल स्कूल जोबनेर समिति में संरक्षक बनने की स्वीकृति प्रदान की। श्री शान्तिवीर जैन गुरुकुल समिति सदस्यों ने किशनगढ़ में श्री संजय जी पापड़ीवाल से भेंट कर समिति द्वारा शिक्षा हेतु किये जा रहे कार्य की जानकारी प्रदान की जिससे संजय जी पापड़ीवाल प्रभावित हुए एवं संरक्षक बनने की स्वीकृति प्रदान करते हुए स्कूल में एक स्मार्ट क्लास रूम बनाने की स्वीकृति भी प्रदान की एवं साथ ही संस्था को आगे बढ़ाने में और भी सहयोग करने का आश्वासन दिया। संजय कुमार जी पुनीत कुमार जी पापड़ीवाल, नगर निवासी हाल निवासी मदनगंज किशनगढ़ प्रमुख व्यवसाई एवं समाजसेवी है, संघ एवं समाज के कार्यों में सदैव अग्रणी रहते है, आपके पिता श्रीमान प्रेमचंद जी पापड़ीवाल जी भी आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज के संघ में परम पूज्य मुनि 108 श्री निस्प्रह सागर जी (नगर गुरु मदनगंज किशनगढ़) के नाम से दीक्षित थे, जिनका देवलोकगमन हो गया है। गुरुकुल परिवार भामाशाह परिवार की अनुमोदना करते हैं एवं संस्था में संरक्षक बनने के लिये आभार प्रकट करता है।

तीन-तीन कल्याणक मनाये हर्षोल्लास से

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर। श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मन्दिर पद्मावती कॉलोनी निर्माण नगर जयपुर में जैन धर्म के सोलहवें तीर्थंकर 1008 भगवान श्री शांतिनाथ का जन्म, तप, और मोक्ष कल्याणक महोत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया गया। कार्यक्रम में मंदिर समिति के मंत्री नरेश झांझरी ने अवगत कराया कि प्रातः अभिषेक, शांतिधारा, नित्य पूजन पाठ और शांति विधान पूजन करके सभी साधर्मी बंधुओं ने महा पुण्य का संचय किया तथा जयकारों के साथ जन्म एवं तप का अर्घ्य चढ़ाकर मोक्ष कल्याणक का लाडू चढ़ाकर विश्व में सुख और समृद्धि की कामना की गई।

जैन सोशल ग्रुप द्वारा आयोजित नौ दिवसीय श्रमण संस्कृति शिक्षण शिविर का हुआ विधिवत शुभारंभ

रवींद्र जैन काला, संवाददाता

बूंदी। जैन सोशल ग्रुप द्वारा आयोजित श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर का चौगान जैन नोहरा आश्रम में पूजन विधान के साथ प्रारंभ हुआ। शिविर प्रभारी डॉ. मोहित जैन-शिल्पा व प्रमोद-आशा गंगवाल ने बताया कि शिविर में आए पंडित शुभम जैन शास्त्री जी ने 9 दिन तक चलने वाले शिविर की जानकारी दी। जैन सोशल ग्रुप के अध्यक्ष योगेंद्र जैन एकता कासलीवाल ने अपना स्वागत भाषण दिया, कार्यक्रम की शुरुआत अवीक एवं रिद्धिमा जैन ने नृत्य के द्वारा मंगलाचरण किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे खंडेलवाल सरावगी समाज संस्थान के अध्यक्ष रविंद्र काला तथा वरिष्ठ जन जैन समिति के अध्यक्ष बिरधी चन्द छाबड़ा व मंत्री कैलाश चंद पाटनी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। इससे पूर्व भगवान के चित्र का अनावरण सुरेश उर्मिला जैन लुहाड़िया ने किया। शिविर का उद्घाटन समाज के वरिष्ठ जन समिति ने किया। कार्यक्रम में ध्वजारोहण विमल कुमार विपुल कुमार समृद्ध कटारिया परिवार ने किया। भगवान के चित्र के सामने दीप प्रज्वलन राजेंद्र कुमार वैभव, श्रीमती सलोनी ढगारिया परिवार ने किया तथा मंगल कलश की स्थापना बिरधी चंद राजेंद्र कुमार श्रीमती चंद्रेश छाबड़ा परिवार ने किया। इस अवसर पर जैन सोशल ग्रुप द्वारा नियमित रूप से जैन पाठशाला चलाने वाली सुमन कासलीवाल, सीमा बाकलीवाल का सम्मान किया गया। शिविर का संचालन लोकेश-अनुराधा गोधा ने किया। मंत्री सुरेंद्र-संगीता छाबड़ा द्वारा सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया गया।

महामस्तकाभिषेक

प्रकाश पाटनी

भीलवाड़ा, 31 मई। बापूनगर स्थित श्री पदमप्रभु दिगंबर जैन मंदिर में अष्टमी के पावन दिवस पर बड़े बाबा मूलनायक श्रीपदम प्रभु भगवान पर महामस्तकाभिषेक बड़े उत्साह पूर्वक हुआ। प्रातः सभी प्रतिमाओं पर अभिषेक करने के उपरांत पूनम चंद सेठी एवं राजेंद्र सोगानी ने पदमप्रभु भगवान पर, अशोक पाटोदी ने आदिनाथ एवं चांदमल जैन ने मुनिसुव्रतनाथ भगवान पर शांतिधारा की तथा अन्य प्रतिमाओं पर भी शांतिधारा की गई।

शांतिनाथ भगवान का जन्म तप, मोक्ष कल्याणक मनाया

अमित गोधा, ब्यावर

ब्यावर। श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर हाउसिंग बोर्ड में श्री 1008 भगवान शान्तिनाथ जन्म, तप, मोक्ष कल्याणक पर हर्षोल्लास और अनेक धार्मिक कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। श्री शान्तिनाथ दिगंबर जैन मन्दिर जी हाउसिंग बोर्ड सहित सभी जिनालयों में भगवान शान्तिनाथ का जन्म, तप, मोक्ष कल्याण महोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। हाउसिंग बोर्ड मंदिर में श्रीजी रजत कलशों से अभिषेक व शांतिधारा करने का सौभाग्य अशोक कुमार उज्जवल पुष्प काला जैन व चंद्रप्रकाश अमित कुमार कविश अथव गोधा जैन परिवार को प्राप्त हुआ। निर्वाण मोदक चढ़ाने का सौभाग्य अशोक कुमार मनोरमा देवी काला परिवार को प्राप्त हुआ।

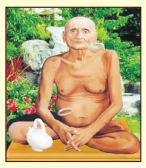

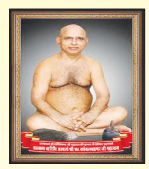

प्रसिद्ध समाजसेवी श्री निर्मल कुमार जी बिन्दायका बगरू (जयपुर) निवासी कोलकाता
प्रवासी को 12 जून 2024 पर 60 वें जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं

आप जियो हजारों साल

साल के दिन हों पचास हजार

श्री निर्मल कुमार जी बिन्दायका बगरू (जयपुर) निवासी कोलकाता प्रवासी
(जन्मोत्सव 12 जून 1964)

-: शुभाकांक्षी :-

समस्त बिन्दायका परिवार (बगरू, जयपुर, सूरत, कोलकाता)
एवं समस्त बड़जात्या परिवार, मदनगंज किशनगढ़ (राजस्थान)

संकलनः राजाबाबू गोधा, फागी, जैन गजट संवाददाता फागी एवं राजस्थान मो. 09460554501

धार्मिक शिविर ही भविष्य के संस्कारों की पहली सोपान

-आर्यिका सृष्टिभूषण माताजी

जैन पंचायत ने आर्यिका श्री के सानिध्य में शिविर में सफल प्रतिभागियों को किया सम्मानित

ललितपुर। गुरू उपकार महामहोत्सव के अन्तर्गत श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर जयपुर द्वारा आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागर महामुनिराज के आशीर्वाद एवं निर्यापक मुनिपुंगव सुधासागर महाराज की प्रेरणा एवं जिनधर्म प्रभाविका आर्यिका सृष्टिभूषण माता जी ससंघ के सानिध्य में नगर चल रहे शिक्षण शिविर का समापन हुआ, जिसमें दिगम्बर जैन पंचायत समिति द्वारा प्रतिभावान मेधावी छात्रों को सम्मानित किया गया। आर्यिका सृष्टिभूषण माता जी ने धार्मिक शिविर को भविष्य के संस्कारों की पहली सोपान बताते हुए कहा कि इसके माध्यम से बच्चे धर्म से जुड़कर बुराई, कुरीतियों से बचते हैं। आर्यिका श्री ने ऐसे शिविरों के समय-समय पर आयोजन और श्रमण संस्कृति संस्थान द्वारा किए जा रहे भागीरथी प्रयास को सराहा और गुरूदेव की प्रेरणा को अद्वितीय बताया। आर्यिका विश्वयशमति माता जी एवं आर्यिका विजिस्सा श्री माता जी ने शिविरार्थियों को भविष्य के लिए बेहतर टिप्स दिए।

शिविर में धर्म सभा का सम्बोधित करते हुए आर्यिका श्री

जनसमुदाय तथा मेधावी शिविरार्थी

प्रातःकाल नगर के दस जिनालयों में सम्मिलित श्रमण संस्कृति संस्कार प्रशिक्षण शिविर का समापन आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागर महाराज के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्जवलित कर शिविर पुण्यार्जक सोमचंद संजीव जैन लकी परिवार के साथ श्रेष्ठीजनों ने किया। अभिनंदनोदय तीर्थ पाठशाला की बालिकाओं ने धार्मिक प्रस्तुति के माध्यम से मंगलाचरण कर गुरु वंदना की। कार्यक्रम की संयोजना करते हुये शिविर संयोजक डा. आलोक शास्त्री ने प्रगति आख्या देते हुए शिविर की उपलब्धियों से अवगत कराया। जैन पंचायत के पूर्व अध्यक्ष अनिल जैन अंचल, गुणमाला जैन, सुषमा जैन अनीता जैन, शिक्षिका नैना जैन मड़ावरा ने शिविर के अनुभव बताते हुए अपने विचार रखे।

ब्रह्मचारिणी रूवी दीदी ने आर्यिका जी की प्रेरणा से समाजोत्थान की दिशा में किए जा रहे प्रयासों से अवगत कराते हुए नमन किया। संस्कार शिविर में नगर के दस जिनालयों में आयोजित हुई बालवोध पूर्वार्द्ध, उत्तरार्द्ध छहढाला, इष्टोपदेश, द्रव्य संग्रह, तत्वार्थसूत्र, श्रावकाचार, सर्वार्थ सिद्धि, जीवकाण्ड ग्रंथ की धार्मिक परीक्षा का परिणाम घोषित किया गया जिसमें उत्तीर्ण शिविरार्थियों को सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह का पुण्यार्जन सुधा वीर व्यायामशाला के राजेन्द्र जैन थनवारा, संजीव जैन ममता स्पोर्ट स्वदेश गोयल वैभव जैन द्वारा किया गया। जैन पंचायत के अध्यक्ष डा. अक्षय टड़ैया महामंत्री आकाश जैन, सनत जैन खजुरिया, कैप्टन राजकुमार जैन, अक्षय अलया मीडिया प्रभारी, मनोज जैन बबीना, प्रफुल्ल जैन, पारस जैन मनया, अखिलेश गदयाना, शीलचंद अनौरा, अशोक दैलवारा, अमित सर्राफ ने शिविर में आमंत्रित विद्वानों को पंचायत की ओर से सम्मानित किया। शिविर में पर्यावरण संरक्षण पर दो सौ बच्चों ने चित्रों पर पर्यावरण संबंधी चित्र बनाए और विजेताओं को पुरूष्कृत किया और बच्चों को कम से कम एक पेड़ लगाने के लिए प्रेरित किया।

- अक्षय अलया

निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर में 700 मरीज हुए लाभान्वित

पुनीत जैन

गुरुग्राम/हरियाणा। प्रत्येक धर्म में पीड़ित मानवता की सेवा को सर्वोपरि बताया है। पीड़ित मानवता की सेवा सबसे बड़ा धर्म है। आप कोई भी धर्म देख लीजिए चाहे वो सनातन धर्म हो, जैन धर्म हो, सिक्ख धर्म हो, ईसाई धर्म हो, सभी धर्मों में हमें पीड़ित मानवता की सेवा का संदेश मिलता है। किसी ने सच ही कहा है ''पर हित सरस धर्म नहीं भाई''। आज समाज का एक बहुत बड़ा तबका धनाभाव के कारण स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित रह जाता है। इस तरह के कैंप में समाज का मीडियम वर्ग व अन्य वर्ग के लोग स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लेते हैं एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होते हैं। यह उद्गार अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैसवाल जैन उपरोचियां सेवा न्यास के महामंत्री सीए कमलेश जैन गुरुग्राम ने निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर के उद्घाटन के अवसर पर व्यक्त किए।अखिल भारतीय श्री दिगंबर जैसवाल जैन

(उपरौचिया) सेवा न्यास व अन्य सहयोगी संस्थाओं द्वारा तथा मेदांता मेडिसिटी एवं आरु क्लिनिक के स्पेशलिस्ट डॉक्टर की टीम द्वारा 2 जून को सुबह 10 बजे से हनुमान मंदिर, गौशाला सोसाइटी, डुंडाहेडा, गुरुग्राम में निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें हृदय रोग, श्वसन रोग, इंटरनल मेडिसिन, आयुर्वेदा, फिजियोथैरेपी, नेत्र रोग से संबंधित निशुल्क जांच एवं परामर्श दिया गया। शिविर में लगभग 700 से अधिक मरीज लाभान्वित हुए। शिविर में श्री सुदीप जैन गुरुग्राम का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा। शिविर में सेवा न्यास के महामंत्री CA। कमलेश जैन, श्री सुदीप जैन, श्री सगुन चंद, श्री रूपेश जैन, श्री सुनील जैन (मोना जेनरेटर), अम्बाह नगरपालिका के पूर्व अध्यक्ष श्री जिनेश जैन, श्री ओमप्रकाश जैन, गिरीश जैन गुरुग्राम, तरुण जैन गुरुग्राम, पवन जैन (मोनू) गुरुग्राम, जय जैन गुरुग्राम, महेंद्र जैन भैय्यन (शिवपुरी), सन्मति फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री अनिल जैन, स्याद्वाद युवा क्लब के अध्यक्ष श्री शैलेश जैन, दिवस जैन, जिनेन्द्र जैन, अभय जैन व SKC की बहुत बड़ी टीम, जैसवाल जैन युवाजन के महामंत्री श्री अजय कुमार जैन (बॉबी), हनुमान मंदिर गौ सेवा समिति के अध्यक्ष एवं समस्त टीम, विप्र फाउंडेशन गुरुग्राम की टीम एवं सैकड़ों की संख्या में गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे।

कल्याणक दिवस मनाया

बदनावर। भगवान श्री शांतिनाथ जी का जन्म, तप एवं मोक्ष कल्याणक दिवस के अवसर पर जैन समाज द्वारा स्थानीय श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में अभिषेक पूजन के पश्चात निर्वाण लाडू समर्पित किया गया। इस अवसर पर इन्दौर निवासी रखबचंद सुनील कुमार ममता मोदी परिवार एवं श्रीमती कीर्ति ओम पाटोदी, चर्चित ऋषिका चहेती पाटोदी, पवन पाटोदी परिवार द्वारा विश्व कल्याण के लिए श्री जी की वृहद शांतिधारा का लाभ प्राप्त किया गया।

चि. आगम एवं सुश्री ओमीशा का सुयश

नागपुर। प्रतिष्ठा पितामह पंडित गुलाबचंद जी पुष्प देश के प्रख्यात प्रतिष्ठाचार्य रहे हैं, आपकी आगमोक्त अनुशासित क्रियाविधि से आप सभी आचार्यों में सर्वमान्य एवं बहुमान प्राप्त थे। आपने देश के लगभग सभी प्रदेशों में द्विशताधिक पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव सम्पन्न कर जिनशासन की महती प्रभावना की। आपकी इस धरोहर को ब्र. जयकुमार निशांत भैया जी ने प्रतिष्ठा एवं इतिहास व पुरातत्व के माध्यम से नवागढ़ को विश्व पटल पर स्थापित किया है। पुष्प जी के द्वितीय पुत्र डॉ. उत्तमचंद जी एवं ऊषा किरण जी छिंदवाड़ा के विख्यात चिकित्सक हैं जो सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में अग्रणी रहते

हैं। डॉ. उत्तमचन्द जी जैन के सुपुत्र डॉ. अंकुर जैन (डी.एम. न्यूरोलॉजी), डॉ. मेघा जैन (स्त्री रोग विशेषज्ञ) ने नागपुर जैसे महानगर में अपनी व्यस्ततम दिनचर्या में अपने जुड़वा पुत्र आगम एवं पुत्री ओमीशा को शिक्षा के साथ संस्कारों को प्रदान किया है। दोनों ने नागपुर के सेंटर पॉइंट स्कूल, काटोल रोड में 10 वीं कक्षा में CBSC की शिक्षा ग्रहण करते हुए बोर्ड परीक्षा में कीर्तिमान स्थापित किया है। आगम जैन ने जहाँ 98.4 प्रतिशत अंक प्राप्तकर नगर में प्रथम स्थान प्राप्त किया है वहीं ओमीशा ने 98.4 प्रतिशत अंक प्राप्तकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। शुभकामनाएं व बधाइयां।

-डॉ. सुनील जैन 'संचय'

चौक लखनऊ में नौ दिवसीय शिक्षण संस्कार शिविर का हुआ समापन

नेमिनाथ महामण्डल विधान सम्पन्न

अशोक जैन

लखनऊ, 30 मई 2024। बृहस्पतिवार, प्रातःकाल 7 बजे से श्री 1008 नेमिनाथ भगवान दिगम्बर जैन मन्दिर, चूड़ी वाली गली, चौक, लखनऊ में श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान पूजन कार्यक्रम की शुरुआत श्री जी के स्वर्ण कलश से अभिषेक द्वारा हुई, जिसके पुण्यार्जक डा. संजीव जैन रहे। श्री जी को पाण्डुशिला पर विराजमान करने का 'सौभाग्य श्री अशोक कुमार आनन्द जैन को मिला। सम्पूर्ण विधान के सौधर्म इन्द्र पुण्यार्जक, प्रथम शांतिधारकर्ता एवं मुख्य मंगल कलश स्थापनकर्ता का सौभाग्य श्रीमती शोभा जैन, श्री मनीष कुमार अमित कुमार जैन परिवार को मिला। द्वितीय शांतिधारा व ईशान इन्द्र एवं अखण्ड ज्योति स्थापनकर्ता पुण्यार्जक श्रीमती इन्द्रावती जैन परिवार रहा। श्री मण्डप पर अष्ट द्रव्य और श्रीफल (नारियल) अर्पण कर श्री नेमिप्रभु के गुणों की आराधना कर सभी प्राणियों

के मध्य शान्ति की कामना की गयी। आरतीकर्ता श्रीमती स्वाती सीमा जैन, चैपाटयाँ रहीं। विभिन्न मंगल क्रियाओं में पारुल जैन, शारदा जैन, सलोनी जैन, ज्योति जैन, अंशु जैन, सुनीता जैन आदि ने पुण्य लाभ लिया। शिविर समापन कार्यक्रम में पं. अमन जी शास्त्री एवं पं. आदर्श जी शास्त्री को समिति द्वारा पगड़ी, पटका, उपहार आदि द्वारा बहुमान किया गया। अलग-अलग परीक्षाओं में अमित जैन, रजनी जैन व राघवी जैन को प्रथम स्थान मिला। दीपिका जैन और मोनिका को द्वितीय स्थान एवं आस्था जैन को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। सभी बच्चों को भी समिति द्वारा पुरस्कार और सर्टीफिकेट प्रदान किये गये। सभी पदाधिकारियों और सदस्यों ने ऐसा संकल्प किया कि आगे भी शिक्षण संस्कार शिविरों के माध्यम से धर्म प्रभावना का कार्य समिति करती रहेगी जिससे वर्तमान पीढ़ी सुसंस्कारित हो सके। कार्यक्रम में हर्ष जैन, अतिशय जैन, आस्था जैन, अक्षय जैन, सीमा जैन, अभिनन्दन जैन, सुषमा जैन, दिलीप जैन, अजय जैन, विकास जैन, अशोक जैन, अमित जैन, पुनीत जैन, उत्कर्ष जैन, सचिन जैन, अक्षत जैन आदि उपस्थित रहे। यह जानकारी श्री अमित कुमार जैन, मन्त्री श्री नेमिनाथ भगवान दिगम्बर जैन मंदिर कमेटी, चैक, लखनऊ द्वारा प्राप्त हुई है।

आचार्य भद्रबाहू सागर जी महाराज की अनमोल वाणी

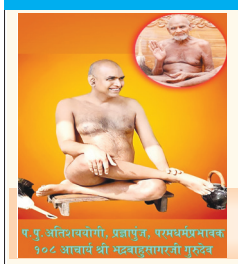

परम पूज्य 108 प्रज्ञापुंज धर्म प्रभावक अतिशय योगी आचार्य श्री भद्रबाहूसागरजी महाराज

जब अहिंसा बढ़ती है तो चारों तरफ हरियाली फैल जाती है

-: नमनकर्ता :-

दीपचन्द गंगवाल, बाराबंकी
श्रीमती नीता जैन, बाराबंकी
श्रीमती अनिता जैन, बाराबंकी
श्रीमती आशु जैन, बाराबंकी
मुदित जैन, प्रयागराज
दिलीप जैन, प्रयागराज ...

महेश जैन, बोदेगांव (महा.)
राकेश जैन, परभनी (महा.)
तुषार मनोज कुमार चौबाकर, परभनी महा.
प्रकाशचन्द्र साउजी, अम्बड़ (महा.)
दिलीप दोषी, मुम्बई (महा.)
सुनिल हीराचन्द दोषी, अकलूज (महा.)

परमपूज्य 108 प्रज्ञापुंज धर्म प्रभावक अतिशययोगी आचार्य श्री भद्रबाहूसागरजी महाराज जी के चरणों में शत शत वन्दन

संकलन: R. K. Advertising शेखर पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट
मो - 09667168267 email: rkpatni777@gmail.com

सम्पादकीय

पिछले दिनों राजस्थान की यात्रा के दौरान सपरिवार कुंभलगढ़ का किला देखने का अवसर प्राप्त हुआ था।

राजस्थान का अपना एक समृद्ध इतिहास है, जो इसे पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बनाता है। यहां के किले और महल पर्यटकों को अपनी ओर बेहद आकर्षित करते हैं। वैसे तो जयपुर से लेकर जैसलमेर तक आमेर का किला लोगों के बीच काफी मशहूर है लेकिन उनमें से कुंभलगढ़ के किले का एक अलग ही महत्व है। इस किले की खासियत इसकी 36 किमी लंबी दीवार है। यह राजस्थान के हिल फाउंटेन में शामिल एक विश्व धरोहर स्थल है। 15वीं शताब्दी के दौरान राणा कुंभा द्वारा निर्मित इस किले की दीवार को एशिया की दूसरी सबसे बड़ी दीवार का दर्जा प्राप्त है। कुंभलगढ़ (शाब्दिक रूप से ''कुंभल किला'') , जिसे भारत की महान दीवार के रूप में भी जाना जाता है, पश्चिमी भारत में राजस्थान राज्य के राजसमंद जिले में राजसमंद शहर से लगभग 48 किमी दूर अरावली पहाड़ियों की पश्चिमी श्रृंखला पर एक मेवाड़ किला है। यह उदयपुर से लगभग 84 किमी दूर स्थित है।

कुम्भलगढ़ किला और जैन मंदिर: एक दृष्टि

आपने चीन की ग्रेट वॉल ऑफ चाइना के बारे में तो सुना होगा लेकिन कुंभलगढ़ को भारत की महान दीवार कहा जाता है। उदयपुर के जंगल से 80 किमी उत्तर में स्थित कुंभलगढ़ किला चित्तौड़गढ़ किले के बाद राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा किला है। अरावली पर्वतमाला पर समुद्र तल से 1,100 मीटर (3,600 फीट) की पहाड़ी की चोटी पर निर्मित कुंभलगढ़ के किले में परिधि की दीवारें हैं जो 36 किमी (22 मील) तक फैली हुई हैं और 15 फीट चैड़ी हैं, जो इसे दुनिया की सबसे लंबी दीवारों में से एक बनाती है। अरावली रेंज में फैला कुम्भलगढ़ किला मेवाड़ के प्रसिद्ध राजा महाराणा प्रताप का जन्म स्थान है। 2013 में विश्व विरासत समिति के 37 वें सत्र में किले को यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।

कुम्भलगढ़ दुर्ग का निर्माण कार्य पूर्ण होने पर महाराणा कुम्भा ने सिक्के डलवाये जिन पर दुर्ग और उसका नाम अंकित था। वास्तुशास्त्र के नियमानुसार बने इस दुर्ग में प्रवेश द्वार, प्राचीर, जलाशय, बाहर जाने के लिए संकटकालीन द्वार, महल, मंदिर, आवासीय इमारतें, यज्ञ वेदी, स्तम्भ, छत्रियां आदि बने हैं।

जैन मंदिरः अनेक हिन्दू मंदिर के साथ ही जैन मंदिर भी निर्मित है - कुंभलगढ़ किले में 300 प्राचीन जैन मंदिरः ऐसा ही एक पुरातात्विक स्थल, जिसे यूनेस्को ने 2013 में विश्व धरोहर स्थल घोषित किया था, भारत के राजस्थान में कुंभलगढ़ किला है। जानकारी के मुताबिक किला परिसर में कुल 360 मंदिर हैं, जिनमें से 300 मंदिर जैन धर्म से संबंधित हैं, यह अपने आपमें रोचक तथ्य है।

300 जैन मंदिरों में से कुछ महत्वपूर्ण हैः पार्श्वनाथ मंदिर (1513 के दौरान निर्मित), पूर्वी तरफ जैन मंदिर और बावन (52) जैन मंदिर। गोलेरा मंदिर समूह में 4 जैन मंदिर हैं। विजय पोल के पास 2 जैन मंदिर, जूना भीलवाड़ा मंदिर, पीतल शाह जैन मंदिर।

यहां कुंभलगढ़ में जैन मंदिरों की एक पूरी चित्र गैलरी है। भारत में एतिहासिक स्थलों की कोई कमी नहीं है। यहां एक से बढ़कर एक महल और किले है जो देखने लायक है। अगर आप इतिहास में रूचि रखते हैं और किलों और महलों को देखने का शौक है तो आपको राजस्थान जरूर जाना चाहिए। इस राज्य में कई पहाड़ी किले हैं, जिनमें से एक है कुम्भलगढ़ किला। राजस्थान के राजसमंद जिले में स्थित इस किले को अजेयगढ़ उपनाम से भी जाना जाता था, क्योंकि इस किले पर विजय प्राप्त करना किसी भी राजा के लिए बेहद ही मुश्किल काम था। करीब 3600 फीट की ऊंचाई पर स्थित यह किला घूमने के लिए एक बेहतरीन जगह है। यहां देश-विदेश से बड़ी संख्या में लोग घूमने के लिए आते हैं। इस किले से आप थार रेगिस्तान के सुंदर दृश्यों का आनंद उठा सकते हैं। जब भी आपको मौका मिले, एक बार इस किले की जरूर सैर कर आएं तथा यहाँ स्थित जैन मंदिरों के इतिहास, पुरा वैभव के दर्शन और नए तथ्यों की खोज जरूर करें।

- डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर, सह सम्पादक

ज्ञान का प्रयोजन

डॉ. नरेन्द्र जैन भारती, सनावद

मानव जीवन में ज्ञान का विशेष महत्व है। ज्ञान के माध्यम से व्यक्ति सही दिशा में कार्य करता है। ज्ञान मनुष्य को पशुओं की अपेक्षा अलग पहचान देता है। पशुओं के पास जो नैसर्गिक ज्ञान होता है वह उसका उपयोग मात्र भोजन करने और इधर-उधर भ्रमण में लगाता है लेकिन मनुष्य में वह शक्ति है कि वह अपने ज्ञान का उपयोग अपने हित और परोपकार में भी कर सकता है। इसलिए ज्ञान को स्वपर प्रकाशक कहा गया है। छहढाला में पं. दौलत राम जी ने कहा है -

'ज्ञान समान न आन
जगत में सुख कौ कारण।
यह परमामृत जन्म जरा
मृतु रोग निवारण।।'

अर्थात जगत में सुख का कोई दूसरा साधन नहीं एक मात्र ज्ञान ही सुख का साधन है क्योंकि इससे जन्म, मृत्यु और बुढ़ापा रूपी रोगों का निवारण होता है। इन तीनों से छुटकारा पाने के लिए ही व्यक्ति धर्म करता है। संयम की साधना और तप में लगा रहता है। जिन भव्य आत्माओं ने त्याग मार्ग अपनाया उन्होंने ज्ञान प्राप्त करके ही इस तरह की साधना के मार्ग को स्वीकार किया। ज्ञान को साधना के रूप में परिवर्तन से ही सभी तरह के शुभ-अशुभ कर्मों से छुटकारा मिलता है। अतः जो व्यक्ति न शास्त्र स्वाध्याय करते हैं, न गुरु उपदेश सुनते हैं उन्हें इन दोनों में अपनी रूचि बढ़ाना चाहिए। जो शास्त्र स्वाध्याय करते हैं उन्हें विषय भोगों से भी दूर रहना चाहिए। क्योंकि ज्ञान का प्रयोजन ही विषय विरक्ति है।

विषय भोगों से विरक्ति होगी तो वहाँ विषय सेवन से रुचि भी घटेगी तथा पाँच पाप-हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह रूप पाप की प्रवृत्तियों से छुटकारा पाने से व्रत पालन भी होगा। तत्वार्थ सूत्र में पाँच पापों से निवृत्ति को ही व्रत पालन कहा गया है। अतः यदि ज्ञान और वैराग्य की शक्ति लोगों में जागृत होती है तो वह विषय भोगों से दूर ही रहेगा है। विषय भोगों के संबंध में कहा गया है कि इंद्रियों के भोग मधुर तो हैं लेकिन विष सम हैं, जो शरीर की सुंदरता को भी समाप्त कर देते है। अज्ञानी जन आसक्ति पूर्वक विषय सेवन तो करता है, परंतु ज्ञान प्राप्त होने पर पछताता भी है। अतः ज्ञान की उपयोगिता जहाँ भी दिखाई देती है वहाँ समझना चाहिए कि जो ज्ञान, मुक्ति मार्ग में सहायक है वही ज्ञान उपयोगी है। ऐसे ज्ञान को ही सम्यग्ज्ञान की उपमा देकर प्रतिष्ठापित किया गया है। ज्ञान से तात्पर्य सम्यग्ज्ञान से ही है जो कर्मों से तथा विषय भोगों से छुटकारा पाने में सहायक बनता है। ज्ञान के संबंध में आचार्य कुंदकुंद स्वामी तो यहाँ तक उपदेश देते हैं कि - ज्ञान गुण से रहित बहुत से लोग अनेक प्रकार के क्रियाकाण्ड करते हुए भी इस ज्ञान स्वरूप पद (आत्मा) को प्राप्त नहीं कर पाते। यदि तुम कर्मों से पूर्ण मुक्ति चाहते हो तो इस नियत ज्ञान को ग्रहण करो और इसका ही सेवन करो (समयसार गाथा 205) इस गाथा का तात्पर्य है कि ज्ञानोपासना में हमेशा निरत रहो ताकि विषयासक्ति समाप्त रहे और विषय भोगों से प्रवृत्ति न बढ़े, शुभ भावों में स्थिरता बनी रहे।

पेड़ लगाएं पर्यावरण बचाएं

कैलाश रारा, रायपुर

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वैश्य वर्ल्ड फाउंडेशन के पर्यावरण संरक्षण प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक कैलाश रारा ने ''पेड़ लगाओ पर्यावरण बचाओ'' के संकल्प के साथ पर्यावरण संरक्षण के लिए जनहित में कुछ जरूरी आवश्यक टिप्स देते हुए कहा कि - मित्रो! आज के दिवस हम यह संकल्प लें कि -

- हम अपने घर एवं दफ्तर के आसपास का वातावरण स्वच्छ बनाए रखेंगे, गंदगी नहीं फैलाएंगे।
- अपने आवासीय परिसर एवं उसके आसपास सर्वाधिक ऑक्सीजन प्रदान करने वाले पेड़ पौधे लगाएंगे।
- अपने जन्मदिवस पर लगाए गए पेड़ की हम जीवन भर सुरक्षा करेंगे।
- अपने आवासीय भवन का वास्तु हम सदैव हवा एवं प्रकाशमय बनाए रखेंगे।
- अपने दैनिक जीवन में सी एन जी एवं बैटरी चलित वाहनों का अधिकाधिक प्रयोग करेंगे।
- उद्योगों से उत्सर्जित होने वाले कार्बन को आधुनिक उपकरणों से नियंत्रित करने हेतु उद्योग मंडलों एवं सरकार को हम निरंतर आगाह करते रहेंगे।
- विकास के नाम पर जल, जंगल एवं पहाड़ों को संकुचित करने वाली करने वाली अदूरदृष्टि योजनाओं के विरुद्ध विभिन्न एनजीओ के माध्यम से समय-समय पर सरकारों को सचेत करते रहेंगे।
- ग्लोबल वार्मिंग पर हम समय-समय पर विचार गोष्ठियां आयोजित करते रहेंगे।
- परमाणु निशस्त्रीकरण का हम जीवन भर समर्थन करते रहेंगे।

आचरणहीन ज्ञान, सुगंधि में लिपटा हुआ शव

डॉ. निर्मल जैन (से. नि. न्यायाधीश)

शिक्षा जीवन का आरंभिक अलंकार है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ है, आचरण सीखना। आचरण सीधा जीवन से जीवन में सीखा जाता है। उसकी परीक्षा भी आचरण रूपी प्रश्नपत्र पर ही होती है। पुस्तक की पढ़ाई भी जरूरी है लेकिन वो केवल शब्दों की स्मृति मात्र तक सीमित है। उससे मस्तिष्क का यंत्र सक्रिय होकर कुछ सूचनाओं को रिकॉर्ड कर लेता है। स्वामी विवेकानन्द ऐसी शिक्षा प्रणाली को उपयुक्त मानते थे जो छात्र के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास, चारित्रिक, नैतिक, आध्यात्मिक विकास तथा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को आचरण में ला सके। जीवन में आने वाले संघर्ष के लिए तैयार कर सके। उनका मानना था कि छात्र को कोई सिखा नहीं सकता, वह स्वयं ही सीखता है। ज्ञान तो व्यक्ति में पहले से ही है, केवल उपयुक्त वातावरण की आवश्यकता होती है।

चूहे व नन्हीं-नन्हीं चीटियों के बिलों को देखें तो लगता है मानो पाताल को छूने की होड़ में लगे हैं। मकड़ियों का जाला जुलाहे की कला को परिष्कृत करता है। बया के बनाए हुए छोटे-छोटे घौसलों को देखकर आश्चर्य होता है। कैसा उनकी कारीगरी का कमाल है, किस तरह उसमें विभिन्न ढंग से निवास की व्यवस्था की गई है? यह सब जन्तु अपनी नन्हीं सी चोंच से कितना श्रम करते हैं, इनको कौन सिखाता है, कौन से स्कूल में इनको पढ़ाया जाता है, इनका तो कोई भी शिक्षक नहीं है। यह सीखते हैं अपने माता-पिता साथियों के आचरण से।

अधिकांश बच्चे अनजाने ही अपने माता-पिता और अध्यापकों के असली विचारों को गृहण कर लेते हैं। यह पक्षी भी अपनी मां-बाप से या अपने अन्य साथियों के आचरण से सीधा ही जीवन से जीवन में सीखते हैं। पक्षियों और मानव की शिक्षा के स्तर में केवल एक ही अंतर है कि पक्षियों की शिक्षा का स्तर केवल शरीर सुरक्षा के उपायों तक ही सीमित है। परंतु मानव की कलाओं का विस्तार उससे बहुत आगे होता है। वो शरीर से ऊपर मन तथा उससे भी आगे चेतना की गहराइयों में पहुंच पूर्ण निरपेक्ष व अथाह अनंतानंद पाना चाहता है। अपने साथ-साथ दूसरों को भी सुखी और सुविधापूर्वक रखना उसकी आखिरी आकांक्षा होती है। यही उसके जीवन की विशालता है इसीलिए हम इंसानों की शिक्षा का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। कुछ शिक्षा गुरु के जीवन से आचरण में सीखी जाती है, कुछ सत्य ऐसे हैं जिनको स्वयं अपने अथक प्रयास से अपने जीवन में खोजा जाता है। जब तक शिक्षा, शिक्षार्थी के आचरण में न उतर जाए, तब तक शैक्षिक ज्ञान अधूरा रहता है। - महान शिक्षाविद आचार्य 'बहुश्रुति'। इन बेजुबान चींटी, चूहे, मकड़ी, बया तो आज भी अपने आचरण से सीखने सीखने की परम्परा निबाह रहे हैं। लेकिन हममें से अधिकांश भी अपना दायित्व भूल कर, भूल करते हैं। धार्मिक प्रक्रियाओं में निमग्न रहते समय 'श्रेष्ठ भक्त' की मुख-मुद्रा (अब तो यह भी अपवाद सा दिखता है) लेकिन जैसे ही देवस्थान की सीड़ियों से उतरे सब कुछ उतर कर पूर्णरूपेण मायावी-सांसारिक मुखौटा चिपक गया। हर क्रिया, प्रतिक्रिया को विवेक पर तौलने वाली नई पीढ़ी हमारी इसी क्षणिक-प्रभावी-आचरण-विहीन धार्मिक जटिल प्रक्रियाओं को देख कर धर्म के आधुनिक स्वरूप से विमुख होती जा रही है। तीर्थंकर महावीर आचरणहीन ज्ञान को सुगंधि में लिपटे हुए शव के समान समझते थे। उत्तम प्रशिक्षण आचरण के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। अपने शिष्यों को शस्त्र-शास्त्र व धनुर्विद्या में सर्वश्रेष्ठ बनाने में प्रतिबद्ध रहने वाले श्रेष्ठ आचार्य महर्षि परशुराम व उनके शिष्य गुरु द्रोणाचार्य में ज्ञान की सीमा किताबी ज्ञान से कहीं अधिक उनके शोध पर आधारित थी। लेखक, दार्शनिक डॉ. राधाकृष्णन जी गीता की कक्षाओं के माध्यम से अपने विद्यार्थियों को जीवन जीने की कला, जीवन का अनुशासन सिखाते थे। हमारा आचरण हमारे व्यक्तित्व का दर्पण होता है। हमारा व्यवहार कुशल होना ही संपूर्ण नहीं अपितु नैतिक मूल्य, सामाजिक जिम्मेदारी, धार्मिक एहसास और संस्कारों के प्रति सम्मान एवं उसके आचरण और व्यवहार में दिखाई देना भी अत्यंत आवश्यक है। ताकि हृदय में आनंद की गंगा का अवतरण होकर जीव-मात्र के प्रति प्रेम व सहिष्णुता, सहअस्तित्व के भाव और व्यवहार पल्लवित हों।

कैंसर रोग का जन्मदाता तंबाकू का नशा

विजय कुमार जैन, राघौगढ़

युवकों में नशे की प्रवृति निरंतर बढ़ रही है। बीड़ी-सिगरेट पीकर नशा करने की आदत किशोरावस्था में महाविद्यालयीन शिक्षा के दौरान बढ़ जाती है। मुंह से सिगरेट-बीड़ी लगते ही युवक किशोरावस्था में ही अनेक गंभीर बीमारियों को शरीर में जन्म दे देते है। वर्तमान में नशे के अनेक साधन उपलब्ध है- नशा करने वाले सिगरेट, बीड़ी, गुटखा, शराब, ब्राउन शुगर आदि का उपयोग जोर-शोर से कर रहे है। बीड़ी-सिगरेट में निकोटीन होता है, इसके नशे का सबसे पहले असर श्वसन प्रणाली पर पड़ता है। इनके नशे का एक दुष्प्रभाव यह होता है कि यह आदत किशोरावस्था में लगती है और जीवन भर रहती है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि भारत में तंबाकू के पौधे को सबसे पहले पुर्तगाली यात्री वास्कोडिगामा लेकर आया था। तंबाकू के भारत में प्रवेश से पहले यहाँ प्राचीनकाल से भांग का नशा किया जाता था। अन्य प्रकार के नशों की अपेक्षा भांग से कैंसर नहीं होता है। धूम्रपान करने वालों के फेफड़ों में कमजोरी आ जाती है, अथवा फेफड़ों में बीमारी प्रवेश कर लेती है। जबकि जो नशा नहीं करते है उन्हें यह स्थिति नहीं होती है। एक सर्वेक्षण के अनुसार यह आंकड़े सामने आये है कि पुरुषों में 50 प्रतिशत एवं महिलाओं में 20 प्रतिशत कैंसर तंबाकू के कारण ही होता है। 25 से 60 आयु समूह में मरने वालों में 25 प्रतिशत धूम्रपान के कारण मौत के मुँह में चले जाते है। यह भी उल्लेखनीय है कि धूम्रपान करने वालों में क्षय रोग टीबी की बीमारी के कीटाणु लगने की आशंका अन्य लोगों से चार गुना ज्यादा होती है। कैंसर इन्स्टीट्यूट नई दिल्ली के कैंसर चिकित्सा सेवा विभाग के निदेशक डॉ. पुनीत गुप्ता ने कुछ समय पूर्व एक चर्चा के दौरान बताया तंबाकू की पत्तियों में करीब चार हजार रसायन होते है, जिनमें से 60 रसायन मनुष्य के शरीर में जाकर डीएनए, आर एन ए और प्रोटीन की संरचना में बदलाव करके गंभीर रोग कैंसर को पैदा करते है। डॉ. पुनीत गुप्ता के अनुसार जब तंबाकू से बने सिगरेट या सिगार को सुलगाया जाता है तो चार हजार रसायनों में से कुछ कैंसर जन्य रसायनों में बदल जाते है। जब तंबाकू का सेवन शराब के साथ किया जाता है तो कैंसर पैदा करने की उसकी क्षमता बहुत अधिक बढ़ जाती है। इसलिए तंबाकू का सेवन किसी भी रूप में घातक है। सिगरेट सिगार या बीड़ी का एक कश भी मानव शरीर के लिये हानिकारक है। एक सर्वेक्षण में यह तथ्य भी सामने आये है कि देश में तंबाकू का सेवन एवं धूम्रपान जानलेवा महामारी का रूप धारण कर चुका है। आम लोगों में इस बुरी आदत को छुड़ाने में मनोवैज्ञानिक उपचार कारगर साबित हुए है। अनेक अध्ययनों से ऐसे प्रमाण मिले है कि मनोवैज्ञानिक उपाय एवं उपचार से धूम्रपान छोड़ने वालों की संख्या बढ़ रही है। रिपोर्ट में यह भी कहा है कि तंबाकू खाना पूरी तरह से बंद करने से कैंसर तथा पूर्व कैंसर के 60 प्रतिशत मामलों को रोका जा सकता है। सर्वेक्षण में यह भी उल्लेख किया है भारत में 12 करोड़ लोग धूम्रपान करते है और दुनियाभर में धूम्रपान करने वालों की संख्या के हिसाब से चीन के बाद हमारा भारत दूसरे स्थान पर है। एक अध्ययन के अनुसार धूम्रपान करने वालों की तुलना में कैंसर से मरने वालों की संभावना सात गुना अधिक होती है। यह भी कहा है शराब और अन्य नशीले पदार्थों के साथ तंबाकू का सेवन तंबाकू के दुष्प्रभाव को और बढ़ा देता है। 50 की उम्र के बाद धूम्रपान को रोकने पर कैंसर का खतरा आधा हो जाता है जबकि 30 की उम्र में धूम्रपान रोकने पर इसके सभी दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है। विगत वर्षों भारत सरकार ने संसद में प्रस्तुत रिपोर्ट में जानकारी दी थी तंबाकू का बाजार विश्व स्तर पर हर वर्ष 8.5 प्रतिशत से बढ़ रहा है। भारत में भारत सरकार द्वारा हर वर्ष सिगरेट पर जीएसटी में वृद्धि करने के वावजूद सिगरेट की खपत में दिन रात वृद्धि हो रही है। यहाँ विशेष रूप से उल्लेख करना चाहेंगे कि धूम्रपान करना सिगरेट का कश लम्बे समय तक खींचकर नशा करने से अनेक बीमारियाँ मानव शरीर में प्रवेश कर जाती है। सिर, गले, फेफड़े, आहार नली, किडनी, पैंक्रियाज, स्तन एवं सर्वाइकल में कैंसर हो सकता है। इसके अलावा हृदय रोग और स्ट्रोक के अलावा पैरों में वैस्कुलर रोग के खतरे बढ़ जाते है। इसका इलाज नहीं है। शासकीय दंत चिकित्सा महाविद्यालय इंदौर के रजिस्ट्रार एवं सुप्रसिद्ध दंत चिकित्सक मैक्सिलोफेशियल सर्जरी विभाग के प्रोफेसर डॉ. अमित रावत से मेरी इस विषय पर विस्तार से चर्चा हुई आपका कहना है ओरल कैंसर भारत में एक बड़ी समस्या है, देश में शीर्ष तीन प्रकार के कैंसर में इसका स्थान है। डॉ. अमित रावत ने बताया, ''जब शरीर के ओरल कैविटी के किसी भी भाग में कैंसर होता है तो इसे ओरल कैंसर कहा जाता है। ओरल कैविटी में होंठ, गाल, लार ग्रंथिया, कोमल व हार्ड तालू, यूवुला, मसूड़ों, टॉन्सिल, जीभ और जीभ के अंदर का हिस्सा आते है। ओरल कैंसर आज हमारे देश की एक प्रमुख समस्या के रुप में बीमारी उभरी है। सबसे ज्यादा पुरुषों में पाया जाता है इसका मुख्य कारण पान मसाला तंबाकू बीड़ी सिगरेट का प्रयोग करना है, एल्कोहल भी इसका कारण है। ओरल कैंसर से पूरी तरह बचा जा सकता है। सभी का योगदान बहुत जरुरी है। तबाकू में करीब पांच सौ तरीके के हानिकारक तत्व होते है जिनमें से 50 ऐसे है जिन्हें हम कार्सिनोजन कहते है।

कैसे होता है ओरल कैंसर -

1. स्मोकिंग - सिगरेट, सिगार, हुक्का, इन तीनों चीजों के आदी लोगों को एक नॉनस्मोकर के मुकाबले माउथ कैंसर होने का 6 फीसदी ज्यादा खतरा होता है।

2. तंबाकू - माउथ कैंसर होने का खतरा तंबाकू सूंघने, खाने या चबाने वाले लोगों को उनकी तुलना में 50 फीसदी ज्यादा होता है, जो तंबाकू यूज नहीं करते। माउथ कैंसर आम तौर पर गाल, गम्स और होंठों में होते है।

3. एल्कोहल - शराब पीने वालों को माउथ कैंसर होने का खतरा बाकी लोगों से 6 फीसद ज्यादा होता है। तम्बाकू सेवन युवा पीढ़ी के लिए अभिशाप है। वर्ष 2020 में बवअपक19 एवं ब्लैक फंगस के मरीजों में भी तम्बाकू उपयोग करने बाले लोगों को अधिक इन्फेक्शन हो रहा है। मेरे मित्र समाज सेवी एवं पिछले लगभग 30 वर्ष से ''गुटखा हानिकारक है'' नशा मुक्ति अभियान चला रहे माली कृष्ण गोपाल कश्यप जिन्हें उत्कृष्ट कार्य के कारण विगत वर्ष मध्य प्रदेश शासन द्वारा महात्मा ज्योतिबा फुले राज्य स्तरीय सम्मान से सम्मानित किया है। कश्यप का कहना है वर्तमान में नशीले गुटखा पाउच का प्रचलन ज्यादा हो रहा है। गुटखा पाउच को सभी उम्र के लोग खा रहे है। गुटखा खाने से मुंह का कैंसर होता है। गुटखा में तंबाकू के साथ और भी नशीली वस्तुओं का मिश्रण किया जाता है। आपका कहना है गुटखा पाउच जिसे हम चाव से खाते है वह कैंसर को शीघ्र जन्म दे रहा है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

VIJAY KUMAR GANGWAL

CROWN Enterprises Pvt. Ltd.

GUWAHATI-781001

Phone : 2517274, Mobile : 98640-20611

e-mail : distribution@crownenterprisesprivatelimited.com

नेमीनाथ भगवान छोटा गिरनार जी बापू गांव

शादी की 15वीं वैवाहिक वर्षगांठ 08.06.2024 पर हार्दिक शुभकामना

मुनिश्री 108 प्रज्ञासागर जी मुनिराज का मंगल आशीर्वाद

नितिन कुमार जी पाण्ड्या

❍ अध्यक्ष-जैन सोशल ग्रुप वीनस

❍ मंत्री-राजस्थान जैन युवा महासभा दक्षिण संभाग

❍ सदस्य-कार्यकारिणी छोटा गिरनारजी बापू गांव

श्रीमती निशा जी जैन पाण्ड्या

-: शुभाकांक्षी :-

अनिल कुमार-श्रीमती उषा पाण्ड्या-संरक्षक छोटा गिरनार बापू गांव (पापा-मम्मी),

विपिन-श्रीमती परमा जैन (भाई-बहू), अदिति, जीविशा, इनायसा (पुत्रियां) एवं समस्त बनेठा वाला परिवार, सांगानेर, जयपुर (राज.)

-: प्रतिष्ठान:-

USHA TEXTILES (BANETHA WALE) All Kinds of Dyeing & Printing Job works Ashawala Sikarpura Road, Sanganer, Jaipur (Raj.)

USHA DYEING WORKS (BANETHA WALE) All Kinds of Dyeing Job Works

ADITI FASHION (BANETHA WALE) All Kinds of Redymade Garments

Nemi Nath Petrol Pump kareda Kothun Lalsol Road (Raj.)

2, Prem Colony, Behind Hanuman Tube Well Co., Tonk Road, Sanganer, Jaipur (Raj.)

9829068263, 9829058263, 9928367143

संकलन: राजाबाबू गोधा, फागी, जैन गजट संवाददाता फागी एवं राजस्थान मो. 09460554501

ब्यावर में हुआ गुरु उपकार महोत्सव के ग्रीष्म कालीन शिविर का समापन समारोह

ब्यावर। श्री दिगम्बर जैन पंचायती नसिया में गुरु उपकार महोत्सव के ग्रीष्मकालीन शिविर का समापन समारोह संपन्न हुआ। आज प्रातःकालीन सबसे पहले अभिषेक व शांतिधारा हुई। श्रीजी के रजत कलशों से शांतिधारा करने का सौभाग्य श्री पारसमल मनोज पाटोदी, श्री दिनेश विशाल जैन, श्री पवन कुमार अतुल पाटनी, श्री वीर कुमार कमल कुमार राँवका को प्राप्त हुआ। इसके बाद आचार्य विद्या सागर जी अष्ट द्रव्यों से पूजन की गई। श्री श्रमण संस्कृति सांगानेर से पढ़े हुए राहतगढ़ के विद्वान श्री अंकित जी शास्त्री, भगवा के विद्वान रूपाश जी शास्त्री

द्वारा आचार्य विद्या सागर महाराज जी की रचित मूकमाटी का मंथन किया गया। ग्रीष्मकालीन शिविर का मंच संचालन कमल राँवका ने किया गया है।

सांगानेर श्रमण संस्कृति के प्राचार्य श्री अरुण कुमार जी शास्त्री ग्रीष्म कालीन शिविर में 27 मई से 2 जून तक उपस्थित थे। श्री दिगम्बर जैन समाज ने राजकुमार-चन्दा जी पहाड़िया का साफा माला व तिलक लगा शॉल पहनाकर बहुमान स्वागत किया गया। प्राचार्य श्री अरुण कुमार जी शास्त्री, अंकित जी शास्त्री, रूपाश जी शास्त्री का माला साफा व तिलक लगा कर सम्मान किया गया। दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष अशोक काला ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

गुवाहाटी में चार दिवसीय शांतिनाथ भगवान का जन्म-तप व मोक्ष कल्याणक महोत्सव

गुवाहाटी। स्थानीय आठगांव स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन चैत्यालय (अंतर्गत श्री दिगंबर जैन पंचायत, गुवाहाटी) में जबलपुर (म.प्र.) से पधारी गायकार श्रीमती प्रीति जैन एवं स्थानीय पंडित नरेंद्र कुमार शास्त्री के सानिध्य में संगीत लहरियों के संग जैन धर्म के 16वें तीर्थंकर 1008 श्री शान्तिनाथ भगवान का जन्म, तप एवं मोक्ष कल्याणक महोत्सव बहुत ही धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आज प्रातः 5:00 बजे श्रीजी का अभिषेक एवं 1008 कलशों से 1008 सौभाग्यशाली पात्रों ने कलशाभिषेक कर पुण्यार्जन किया। तत्पश्चात श्रीजी को पालकी में विराजमान कर ढोल - नगाड़ों के साथ शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा विभिन्न मार्गों से होती हुई वापस आयोजन स्थल में

पहुंची, जहां श्रीजी की पूजा-अर्चना एवं श्री शांतिनाथ महामंडल विधान का आयोजन किया गया। जिसमें समाज के बच्चे, पुरूष एवं महिलाओं ने पारंपरिक वेशभूषा में कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में समाज के सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम के पश्चात एटी रोड स्थित महावीर भवन धर्मस्थल में आठगांव व्यवस्थापक समिति द्वारा वात्सल्य भोजन की व्यवस्था की गई। जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। मनोज कुमार विनायकिया एवं शैलेंश कुमार गंगवाल आदि के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक आयोजन कराने में आठगांव चैत्यालय व्यवस्थापक समिति के सभी सदस्यों का सराहनीय सहयोग रहा। यह जानकारी समिति द्वारा एक प्रेस विज्ञप्ति में दी गई है।

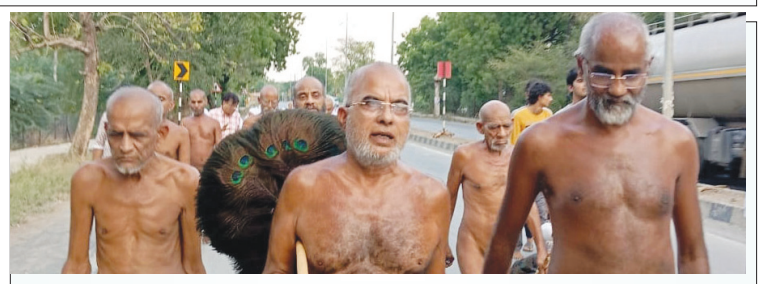

आचार्य श्री विरागसागरजी का विहार

राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विराग सागरजी महाराज (ससंघ) का मंगल विहार (महाराष्ट्र महोत्सव) के लिए बड़े हर्षोल्लास के साथ महाराष्ट्र प्रांत में बिहार हो रहा है। आचार्य श्री ससंघ का श्री सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरी की वंदना करके, परतवाड़ा से गाँधी ग्राम, अकोला की ओर अविरत विहार चल रहा है। संभावित मार्ग - **परतवाड़ा, गाँधी ग्राम से होते हुए अकोला की ओर।**

आचार्यश्री निर्भय सागर जी ससंघ का उदासीन आश्रम में हुआ भव्य मंगल प्रवेश

सागर। सकल दिगंबर जैन समाज एवं उदासीन आश्रम साधिका आश्रम कमेटी के विशेष आग्रह पर आचार्यश्री भगवान शांतिनाथ के जन्म, तप और मोक्ष कल्याणक महोत्सव के आयोजन हेतु पहुंचे। आचार्यश्री के शिष्य मुनिश्री सुदत्तसागर जी, मुनिश्री भूदत्तसागर जी एवं क्षुल्लक श्री चन्द्रदत्त सागर जी महाराज ने वर्धमान कालोनी के सैकड़ों श्रावकों के साथ आचार्य श्री की भव्य आगवानी की। तदुपरांत आचार्यश्री बड़ा बाजार , इतवारी बाजार होते हुए गाजे बाजे के साथ उदासीन आश्रम पहुंचे। मार्ग में सभी भक्तों ने अपने द्वार के सामने रंगोली बनाई, आचार्यश्री के चरण प्रक्षालन किये और आरती की। कार्यक्रम की शुरुआत में आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के चित्र का अनावरण, दीप प्रज्वलन किया गया। आचार्य श्री ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा जीवन का लक्ष्य बनाकर जीने वाला व्यक्ति अपने मार्ग से नहीं भटकते हैं।

संस्कार शिविर में बच्चों को सिखाई प्रभु पूजन विधि

अक्षय अलया, संवाददाता

ललितपुर। श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर जयपुर द्वारा आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागर महामुनिराज के आशीर्वाद एवं निर्यापक मुनिपुंगव सुधासागर महाराज की प्रेरणा एवं जिनधर्म प्रभाविका आर्यिका सृष्टिभूषण माता जी ससंघ के सानिध्य में शिक्षण शिविर में बच्चों को अभिनंदनोदय तीर्थ पर सामूहिक रूप से संस्कार शिविर में प्रभु पूजन की विधि सिखाई। शिविरार्थियों ने सामूहिक रूप से चित्रों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता की। आज प्रातःकाल अभिनंदनोदय तीर्थ पर नगर के दस जिनालयों में सम्मिलित श्रमण संस्कृति संस्कार प्रशिक्षण शिविर के शिविरार्थी श्रीजी का अभिषेक एवं शान्तिधारा में सम्मिलित हुए तदुपरान्त शिविर संयोजक डा. आलोक शास्त्री, मुकेश शास्त्री,

डा. राजेश शास्त्री एवं सागानेर के विद्वानों के सहयोग से अष्ट द्रव्य से पूजन कराने की विधि सिखाई। उन्होंने अभिभावकों से आव्हान किया कि बच्चों को संस्कारवान बनाने के लिए पाठशालाओं में अवश्य भेजें। इस मौके पर प्रमुख रूप से जैन पंचायत के महामंत्री आकाश जैन, सनत जैन खजुरिया, कैप्टन राजकुमार जैन, प्रबंधक मोदी पंकज जैन, अशोक दैलवारा, मीडिया प्रभारी अक्षय अलया, राजेन्द्र जैन थनवारा, प्रफुल्ल जैन, पारस मनया, शिक्षक पुष्पेन्द्र जैन, जैन वीर व्यायामशाला के कार्यकारी अध्यक्ष राहुल सिंघई, राजेन्द्र मास्टर, संजीव कडंकी, विजय जैन, राजेश चंद्रा, अभिषेक जैन, अजय जैन ग्रहण जैन, रवीन्द्र कडंकी, चंचल पहलवान, शैलेन्द्र सिंघई, पियंक जैन डैनी, योगेश जैन सुमित समैया, भरत जमौरिया, धीरज कामरेड आदि मौजूद रहे।

भोजन का वितरण व सांस्कृतिक कार्यक्रम

गुवाहाटी। आठगांव स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन चैत्यालय (अंतर्गत श्री दिगंबर जैन पंचायत, गुवाहाटी) द्वारा श्री शांतिनाथ भगवान का चार दिवसीय जन्म, तप व मोक्ष कल्याणक महोत्सव के उपलक्ष्य में एम. एस. रोड स्थित भगवान महावीर धर्मस्थल में आठगाँव चैत्यालय व्यवस्थापक समिति द्वारा गरीबों के बीच भोजन वितरण किया गया।

राजकीय अतिथि आचार्य श्री प्रमुख सागर जी महाराज के अनमोल सूत्र

शत् शत् नमन वंदन

भयभीत मनुष्य सत्य के मार्ग का अनुसरण करने में समर्थ नहीं है

प्रभावना दिवाकर, श्रमण धर्म प्रभाकर, करूणा सागर, अहिंसा तीर्थ-प्रणेता, राष्ट्रसन्त, पंजाब श्रावक उद्धारक, सरलमना, ग्राम मन्दिर उद्धारक, इटावा गौरव, संस्कार प्रणेता, गुण-गौरव शिरोमणि, पुरूषार्थ के पुरूषोत्तम, श्रमण-गौरव, राजकीय अतिथि, राष्ट्रसन्त, बालयोगी के चरणों में शत-शत नमन

-: नमनकर्ता :-

श्रीमती प्रभा सेठी, गुवाहाटी
श्रीमती रिंकी सेठी, विजयनगर
श्रीमती सोनल पाटनी, कोलकाता
श्रीमती शिम्पल सेठी, आठगांव, गुवाहाटी
श्रीमती चन्द्रा बड़जात्या, गुवाहाटी
श्रीमती रूपा रारा, गुवाहाटी
सुभाष चूड़ीवाल, दिसपुर, गुवाहाटी
राजकुमार टोंग्या, रेहाबाड़ी, गुवाहाटी
विनोद कुमार गंगवाल, छत्रीबाड़ी, गुवाहाटी
पूर्वोत्तर प्रदेशीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, गुवाहाटी
श्रीमती हेमा पाटनी, पान बाजार, गुवाहाटी
श्रीमती कुसुम बड़जात्या, गुवाहाटी

राजकीय अतिथि आचार्य श्री प्रमुख सागर जी महाराज दिसपुर में विराजमान हैं।

संकलन: R. K. Advertising शेखर पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट
मो - 09667168267 email: rkpatni777@gmail.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

डायनामिक इंजीनियर्स प्रा. लि.
28, बैरकपुर ट्रन्क रोड
कोलकाता- 700002 'प.बं.'
फोन : 25577534

भावपूर्ण विनयांजलि

परम पूज्य वात्सल्य मूर्ति, अद्वितीय क्षयोपशम के धारी, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, प्रखर वक्ता, कठोर अनुशासन पालक, परीषह विजेता, भक्तवत्सल, अज्ञानतिमिर हरता, बालब्रह्मचारी, श्रमण संस्कृति संवर्द्धक, भाग्योदय तीर्थ प्रणेता, दयोदय तीर्थ प्रदाता, हथकरघा के प्रणेता, इंडिया नहीं भारत बोलो द्वारा स्वदेशी आंदोलन के जन्मदाता, हिन्दी भाषा के उन्मूलक, इस युग के ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महामुनिराज का 18 फरवरी 2024 को देवलोक गमन की खबर से हम सब व पूरा विश्व भी इस महान आतम के परायण से मर्माहत हुए हैं, आज इस महाआत्मा को अपने सम्वेदन प्रगट करते हुये विनयांजलि अर्पित करते हैं।

आचार्य विद्यासागर जी महाराज के चरणों में हीरालाल बैनाड़ा परिवार की भक्ति निम्न पंक्तियों में व्यक्त होती है-

कुंदकुद समचर्या जिनकी समंत भद्र सी आन है।
मानतुंग सम भक्ति जिनकी जिन आगम श्रद्धांन है।।
जिनके मुख से झरती रहती थी सम्यज्ञ ज्ञान धारा है।
ऐसे आचार्य विद्यासागर जी को शत शत नमन हमारा है।।

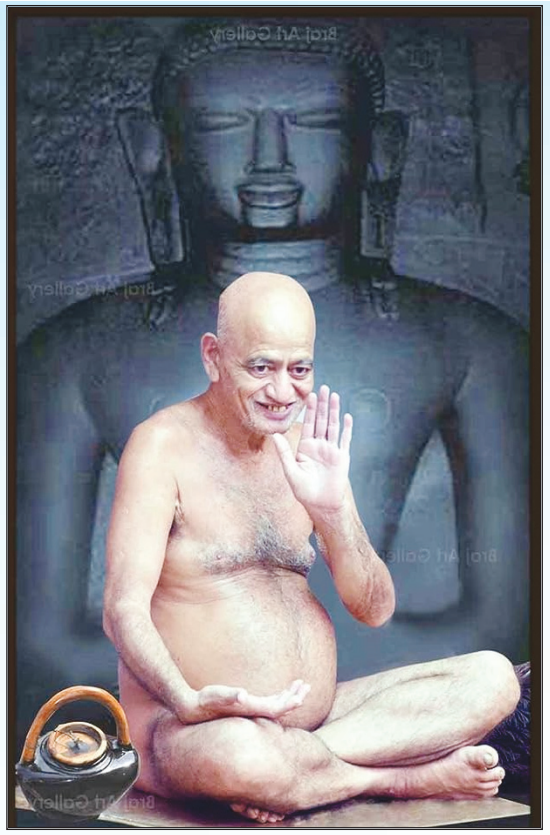

रचियता - डॉ. निर्मल जैन (जज), नई दिल्ली

क्रोध तरसता था आने को, माया दूर खड़ी सकुचाती
वैमनस्य, हिंसा की धारा, तुम समीप आते रूक जाती
जिस वाणी को सुनने के लिए कान लालायित रहते थे आज
उनके ही लिए कुछ कहने के लिए शब्द भी असमंजस में है।
चुक जायेगी भाषा सारी शब्दकोष सब रीत जायेंगें,
एक जन्म क्या कई जन्म भी मुझ निर्मल के बीत जाएंगें,
फिर भी पूरा हो न सकेगा हे गुरूवर! गुणगान आपका।
निर्मल की नन्हीं सी कलम प्रभु! है विराट व्यक्तित्व आपका।
मूक हुई वाणी, घर-घर में होगी मुखर मूकमाटी,
गहन अध्येता जिनदर्शन के, अमिट अजेय अस्तित्व आपका।
सारे सागर खारी होते, प्राणी प्यासा रह जाता है,
गंगा, जमुना का जल भी मिलकर खारी हो जाता है।
देख आपको जग ने जाना कुछ सागर मीठे भी होते,
अपनी एक लहर से ही मन की कड़वाहट धो देते।
पूर्ण समर्पित रत्न-त्रय को पूरे ज्ञान-दिवाकर थे,
अमृत जल से छलक रहे वो सागर विद्या सागर थे।
ज्ञान श्रेष्ठ, आचार श्रेष्ठ था सहज शांत-वृति पाई,
मिला श्रेष्ठ पांडित्य न फिर भी अहंकार की परछाई।
क्रोध तरसता था आने को, माया दूर खड़ी सकुचाती,
वैमनस्य, हिंसा की धारा, तुम समीप आते रूक जाती।
दीपक भी सूरत बन जाता, मन में धार स्व-पर कल्याण,
ऐसे ही तुम थे तो मानव पर दिखते पूरे भगवान।
कोई तुम्हें कहता पैगम्बर कितनों के तुम शंकर हो,
किसी को दिखती छवि मसीह की अपने तो तीर्थंकर सम हो।

-: नमनकर्ता :-

हीरालाल बैनाड़ा- श्रीमती बीना बैनाड़ा 'आगरा'

आप परम मुनि भक्त, दानवीर, श्रेष्ठी, दृढ़ संस्कारवान, व्यवहार ज्ञान में निपुण, समाज हितैषी, इतनी ऊँचाईयों पर जाकर भी अपने मूल स्वरूप को न भूलने वाले व्यक्ति हैं, मूल स्वरूप का मतलब सरल स्वभाव रत्नों से भी महंगी मनुष्य पर्याय है और इस मनुष्य पर्याय की सार्थकता हीरालाल बैनाड़ा जैसे व्यक्तित्व से है।

हीरालाल बैनाड़ा जी का व्यक्तित्व- करोड़ों की आबादी वाले इस संसार में यदा-कदा ऐसे कर्म धन्य युग पुरूष जन्म लेते है जिनकी प्रेरणा और प्रतिबद्धता सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय होती है। जिनका संकल्पित साहस अदम्य होता है, जो अपनी कर्मठता से औरो को भी ऊर्जायित, प्रेरित करते है। जो मशाल बनकर औरो का पथ आलोकित करते है तथा शाश्वत प्रेरणापुंज बने रहते है।

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

धार्मिक/सामाजिक आयोजनों में जैन गज़ट को दानराशि भेजना न भूले

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. गुरूजी चरण स्पर्श, मेरी बिटिया की सीए की तैयारी चल रही है, क्या वह सीए बन सकेगी - केतन शंकर, सूरत (गुजरात)
उत्तर - केतन शंकर जी, आपकी बिटिया की कुंडली में सीए बनने के प्रबल योग है, आप बुधवार को उसे पन्ना रत्न धारण करा दें।

प्रश्न 2. मेरी पत्नी के सिर में काफी समय से दर्द चल रहा है। क्या कारण है? - भूमिको, इन्दौर
उत्तर - भूमिको जी, आपकी पत्नी की कुंडली में नीच के सूर्य की दशा चल रही है। आप उसे माणिक्य रत्न धारण करायें, सूर्य उदय के समय श्री पद्मप्रभु चालीसा पढ़ें।

प्रश्न 3. बिटिया की शादी को लेकर परेशान हूँ, पिछले आठ साल से प्रयास कर रहा हूँ, मगर कहीं काम नहीं बन रहा - दलवीर जैन, बनारस
उत्तर - दलवीर जी, आपकी बिटिया की कुंडली में सप्तम भाव गुरू ग्रह व शुक्र ग्रह कमजोर है। आप इन तीनों की शान्ति करायें तो आपका कार्य बन सकता है।

प्रश्न 4. गुरूजी जय जिनेन्द्र, मुझे कौन सा रत्न लाभ देगा - पुण्य वीर सोनी, उज्जैन (म.प्र.)
उत्तर - पुण्यवीर जी, आप नवम भाव के स्वामी मंगल का रत्न मूंगा सवा 6 रत्ती का धारण करें।

प्रश्न 5. गुरूजी जय जिनेन्द्र, मेरे पूरे परिवार का मन घूमने को करता है - अजय जैन, कृष्णानगर, दिल्ली
उत्तर - आप समय-समय पर श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र का पाठ पूरे परिवार के साथ करें तथा श्री पार्श्वनाथ विधान करें, अवश्य फर्क पड़ेगा।

गुरु जी से संपर्क सूत्र-
9990402062, 8826755078

TATA PLAY 1086 | dish tv 1109 | DEN 266 | 1217 | 700 airtel | 842 hathway
आदिनाथ टी वी
एव अन्य सभी टीवी केबल पर उपलब्ध

आज का राशिफल
जैन ज्योतिषाचार्य
रवि जैन गुरूजी
द्वारा आदिनाथ चैनल पर प्रतिदिन
प्रातः 06:20 बजे
दोपहर 02:15 बजे
संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय जैन ज्योतिषाचार्य परिषद् (पंजी.)
विवाह, मकान, व्यापार, संतान, प्रमोशन, परीक्षा, विदेश यात्रा आदि समस्याओं का समाधान जैन आगम के अनुसार प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें :
1/6991, शिवाजी पार्क, शाहदरा, दिल्ली - 32
M. 011 22325069, 9990402062, 8826755078

स्वागत है जैन गजट के नये आजीवन सदस्यों का

कैलाश चन्द जैन
हजारीबाग (झारखण्ड)

कुन्दन मल सेठी जैन
गिरिडीह (झारखण्ड)

सुरेन्द्र कुमार
सरावगी,
गिरिडीह
(झारखण्ड)

महेन्द्र कुमार सेठी
गिरिडीह (झारखण्ड)

पूरणमल जैन
रांची (झारखण्ड)

सम्भूकुमार जैन
गिरिडीह (झारखण्ड)

विजय कुमार शाह जैन
गिरिडीह (झारखण्ड)

- श्री दिगम्बर जैन समाज, झुमरीतिलैया, कोडरमा (झारखण्ड)
- श्री दिगम्बर जैन पंचायत मंदिर, हजारीबाग (झारखण्ड)
- वीरेन्द्र कुमार धमेन्द्र कुमार बाकलीवाल जैन, रांची (झारखण्ड)
- नरेन्द्र कुमार पाण्ड्या, रांची (झारखण्ड)
- संजय कुमार नवीन कुमार पापड़ीवाल जैन, रांची (झारखण्ड)
- सुनील जी चांदवाड़, रांची (झारखण्ड)
- महेन्द्र कुमार छाबड़ा जैन, रांची (झारखण्ड)
- ज्ञानचंद प्रभात सेठी, गिरिडीह (झारखण्ड)

आप सभी महानुभावों ने 2100/- रु. प्रदान कर जैन गजट की आजीवन सदस्यता ग्रहण की है जिसके लिये जैन गजट परिवार आपका अत्यंत आभारी है।

छोटी सी सफलता पर इतराने वाले बड़ी सफलता पा ही नहीं पाते।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...
WITH BEST COMPLIMENTS FROM
Padam Chand Jain (Dhakra)
(Vice President-Shri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha)
Mahendra Kumar Jain (Dhakra)
(Working President- Shri Bharatvarshiya Digamber Jain (Teerth Sanrakshini) Mahasabha T. N. Branch
Pradeep Commercial Interprises
(Iron & Steel Merchants)
56, Sembudoss Street, 2nd Floor, P. B. No 8343, Chennai-600 001
Phone No. 25228522, 25220032 Off. 25206812, 25202601 Resi.
Mobile : P. C. Jain-9444918024 M.k.Jain-9444028522
ASSOCIATE :
Shanti Enterprises
Banglore 080-25266482, Mob. : 09448092260

सौरभ सागर वचन

जब अहिंसा बढ़ती है तो चारों तरफ हरियाली फैल जाती है

-: नमनकर्ता :-

- राजूलाल जी बैनाडा, पचाला वाले जयपुर
- श्रीमती स्नेहलता सौगानी, जयपुर
- दिनेश चन्द कासलीवाल, जयपुर
- नीरज जैन, जयपुर
- श्रीमती रत्ना जैन(सुरजमल विहार, दिल्ली)
- श्रीमती ऊषा जैन, आगरा
- रमेश चन्द तिजारिया, जयपुर
- धर्मचंद पहाड़िया, जयपुर
- कुशल ठोल्या, जयपुर
- जोहरी बाजार दिगम्बर जैन महिला समिति
- प्रदीप जैन, मेरठ
- सारिका जैन, मेरठ

ज्ञानयोगी, संस्कार प्रणेता, जीवन आशा हॉस्पिटल प्रेरणास्रोत आचार्य सौरभ सागर जी जयपुर में विराजमान है।

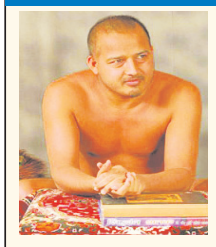

संकलन: R. K. Advertising शेखर पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट
मो - 09667168267 email: rkpatni777@gmail.com

डोलफिन वाटरप्रुफिंग
एडवांस टेक्नोलॉजी से छत को रखे वाटप्रूफ, हीटप्रूफ, वेदर प्रूफ पायें सीलन, लीकेज एवं गर्मी से राहत व बिजली के बिल में भारी बचत करें।
छत व दीवारों का बिना तोड़फोड़ के सीलन का निवारण
For Your New & Old Construction

DR. FIXIT Pidilite WATERPROOFING EXPERT
Rajendra Jain
80036-14691
Dr. Fixit Authorised Project Applicator

DOLPHIN WATERPROOFING
116/183, Agarwal Farm, Mansarovar, Jaipur

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009
कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबा. 08290950000
महामंत्री
प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या
Mob- 09840213132
कोषाध्यक्ष
पवन गोधा
मो. 9311198985
प्रधान सम्पादक
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com
परामर्शक सदस्य
शिवचरणलाल जैन, मैनपुरी
मो. 09219160350
बसन्त कुमार शास्त्री, शिवाड़
मो. 08107581334
सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233, 9369025668
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com
सह सम्पादक (मानद)
डॉ. श्री महावीर शास्त्री, सोलापुर
मो. 09422457582
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108
लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344
दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से
कोरियर से मंगाने पर
अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र. रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500
'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क-
7607921391,
9415008344,7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल
jaingazette2@gmail.com
पर भेजें

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एक्सप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सम्पादक -सुधेश कुमार जैन

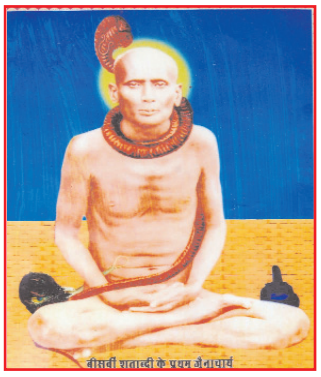
बीसवीं शताब्दी के प्रथम जैनाचार्य

आचार्यश्री पदारोहण शताब्दी वर्ष पर आचार्यश्री के चरणों में शत शत वंदन नमन

मृत्यु तुमको छल न पाई विषधरों द्वारा डरा कर, धन्य तुम, चारित्र-चूड़ामणि तपोनिधि शांतिसागर।

मृत्यु तुमको छल न पाई विषधरों द्वारा डरा कर, धन्य तुम, चारित्र-चूड़ामणि तपोनिधि शांतिसागर।
देह को परमार्थ के पथ में सहायक जब न पाया, मृत्यु को जीवन महोत्सव का सफल साधन बनाया।
सृष्टि में उत्सर्ग के दृष्टान्त मिलते हर कहीं हैं, किन्तु 'यम सल्लेखना' प्रत्येक के वश की नहीं है।
मुक्ति-पथ प्रतिक्षण निमंत्रित कर रहा पलकें बिछाये, क्यों न तन के पिंजरे में बंद शुद्धात्मा अघाये।
प्राण ममता की विषमता आज आसन से हिली है, आज फिर नूतन दिशा युग की अमरता को मिली है।
दीप जो तुमने जलाया वह सदा जलता रहेगा, मोक्ष-यात्री अब सहज इस पथ पर चलता रहेगा।
ज्ञान की लहरें जहाँ अन्तःकरण में मौज मारें, ओस कण की ओर फिर गम्भीर सागर क्यों निहारे।
यम-परीक्षा झेल सांगो पांग मृत्युंजय कहाये, यश तुम्हें नतशीश होकर क्यों न श्रद्धांजलि चढ़ाये।
मृत्यु के परिहास का अभिशाप अपने आप भोगा, विश्व का इतिहास युग-युग नाम लेकर धन्य होगा। - स्व. कल्याण कुमार जैन 'शशि'

प्रेरणा

न जलते दीप से पूछो कि तेल कितना है, न चलती सांस से पूछो कि बाकी खेल कितना है।
पूछना है तो दिगम्बर साधु से पूछो कि पाप में वेदना कितनी और संयम में चैन कितना है। - शेखरचन्द पाटनी

वीरेन्द्र हेगड़े
धर्मस्थल

अशोक पाटनी
(आर.के.मार्बल्स)
मदनगंज-किशनगढ़

-: नमनकर्ता:-

वीरेन्द्र हेगड़े
धर्मस्थल

अशोक पाटनी
(आर.के.मार्बल्स)
मदनगंज-किशनगढ़

हीरा लाल बैनाड़ा
आगरा

राजेन्द्र कटारिया
अहमदाबाद

विवेक काला
जयपुर

प्रकाश पाटनी
शिलोंग

श्रीपाल सबलावत
जयपुर (रेडी प्रिंट)

नरेन्द्र कुमार
पाण्ड्या, जोरहट

सुधांशु
कासलीवाल

श्रीमती रितु
कासलीवाल

जयपुर के नमनकर्ता

धर्मचन्द
पहाड़िया

प्रदीप
चूड़ीवाल

नरेन्द्र जैन
निखार

घेवर चन्द जैन
(कमिश्नर आयकर)

ऋषभ कुमार सेठी
(अध्यक्ष तिलकनगर)

नवरत्नमल पाटनी
अष्टम प्रतिमाधारी

कुशल ठोल्या

श्रीमती
मधु ठोल्या

सुनील पहाड़िया
अक्षत बिल्डर्स

श्रीमती निशा
पहाड़िया

किशनगढ़ के नमनकर्ता

विजय कुमार
कासलीवाल, कुचील वाले

माणकचन्द
गंगवाल

संजय
पापड़ीवाल

विनोद कुमार
पाटनी

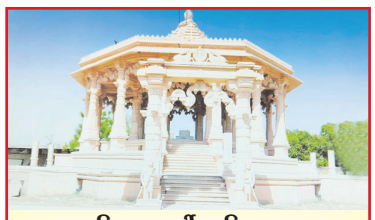
चारित्र चक्रवर्ती शान्तिसागर
स्मारक ट्रस्ट

कैलाशचन्द पाटनी

भागचन्द बोहरा

हीरालाल बाकलीवाल
खन्डाव वाले

दीपक रारा

जयपुर के नमनकर्ता

गुवाहाटी के नमनकर्ता

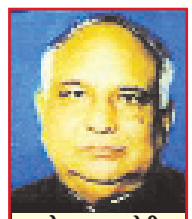
सोहनलाल सेठी
श्याम नगर, जयपुर

दिनेशचन्द कासलीवाल
(प्रमुख समाजसेवी)

श्रीमती किरण
काला

अजित चांदुवाड़

सरोज देवी पाण्ड्या

ज्ञानचन्द पाटनी दुर्ग

मणीन्द्र जैन
दिल्ली

पवन मोदी
कोलकाता

अशोक चूड़ीवाल
बरपेटारोड

महावीर जी बोहरा
आनन्दपुरकालू

जोरहाट के नमनकर्ता

डीमापुर के नमनकर्ता

विमल कुमार
पाटनी

शिखरी लाल जी
चांदुवाड़

श्रीमती मंदी
चांदुवाड़

श्री विनोद कुमार
झांझरी

श्रीमती संतोष देवी
झांझरी

अनिल कुमार
टोंग्या

शिखरचन्द
बाकलीवाल

स्व. फूलचन्द जी
झांझरी

श्रीमती डगली देवी
झांझरी

धर्मचन्द पाटनी
शिवसागर

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

संक्लेशन से क्षयोपशम घटता है, इसलिए बाह्य निमित्तों से बचें- आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज

परम पूज्य, वात्सल्य वारिधि, पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के चरणों में
शत् शत् नमन्

शत् शत् नमन
शत् शत् वंदन

-: नमनकर्ता :-

प्रकाशचन्द - सरला देवी पाटनी
निवासी सुजानगढ़ प्रवासी शिलांग

सुधान्शु कासलीवाल
जयपुर

नवरतनमल
श्यामनगर जयपुर
(अष्टम प्रतिमाधारी)

इन्द्रमणी देवी चूड़ीवाल
धर्मपत्नी स्व. आनन्दीलाल जी
चूड़ीवाल निस्वार फैशन्स, जयपुर

राजेन्द्र कटारिया
अहमदाबाद

श्रीमती रत्नप्रभा सेठी
गुवाहाटी

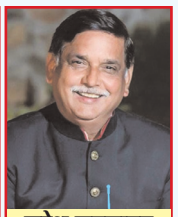

सुरेश सबलावत
जयपुर

संजय पापड़ीवाल
मदनगंज-किशनगढ

महावीर बोहरा
जोधपुर

प्रेमचंद सेठी
मेड़ता रोड (राज.)

अशोक कटारिया
(निवाई वाले)

श्रीमती इन्द्रमणी देवी
बाकलीवाल, सिल्चर

श्रीमती कंचन देवी
विनायक्या
निवासी सीकर प्रवासी सूरत

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

दिल्ली कृष्णा नगर में आचार्य विमर्श सागर के वर्षायोग की पूर्ण संभावना

6/7 जुलाई को होगा जिनालय का शिलान्यास

दिल्ली (मनोज जैन नायक)। राष्ट्रयोगी, राष्ट्रगौरव भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्श सागर जी महामुनिराज आ रहे हैं। राष्ट्र की राजधानी दिल्ली में सन 2024 का स्वर्णिम पावन वर्षायोग राजधानी दिल्ली में संपन्न होगा। 2 जून रविवार को दिल्ली की कृष्णा नगर की समुचित जैन समाज ने संगठित होकर अतिशय क्षेत्र तिजारा में विराजमान परम पूज्य भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्श सागर जी महामुनिराज ससंघ के पावन चरणों में राजधानी चातुर्मास हेतु भावभीना निवेदन किया, इस अवसर पर आगरा, द्वारका, कोटा, जलेसर, एटा आदि अनेक नगरों के गुरु भक्तों ने गुरु चरणों में अपना निवेदन निवेदित किया।

भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्श सागर जी महामुनिराज ने राजधानी के गुरु भक्तों को मंगलमय शुभाशीष प्रदान करते हुए कहा कि

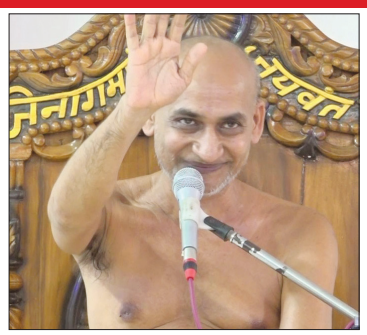

विगत दो वर्षों पूर्व मेरा दो दिन के लिए कृष्णा नगर में प्रवास हुआ था, तब दो दिन में ही ऐसा लग रहा था जैसे यह संयोग मात्र आज का ही नहीं है यह संयोग भव - भव से चला आ रहा हो तब से लेकर आज तक समाज के बंधुजन जगह-जगह पहुंचकर चातुर्मास हेतु निवेदन करते आ रहे हैं। समाज का प्रतिनिधिमंडल भी आचार्य गुरुदेव विराग सागर जी महामुनिराज के पास पत्र लेकर पहुंचा था। पूज्य आचार्य गुरुदेव ने आपको अपना आशीष प्रदान किया है अतः कृष्णा नगर दिल्ली चातुर्मास 2024 हेतु मेरा 99 प्रतिशत आशीर्वाद है।

ध्यान रखना दिल्ली राजधानी में मुझे गृहस्थों के घर नहीं चाहिए, मुझे दिल्ली में श्रावकों के घर चाहिए। आप सभी चतुर्विधि संघ की सेवा कर अपना कर्तव्य पूर्ण करें।

इसी मंगल अवसर पर द्वारिका सेक्टर- 10 के भक्तों ने मिलकर सुसज्जित अष्टद्रव्यों से आचार्य श्री की आराधना संपन्न की एवं द्वारका में एक नवीन जिनालय निर्माण का आशीर्वाद प्रदान करने हेतु निवेदन किया। पूज्य आचार्य श्री ने दिल्ली राजधानी में प्रवेश के बाद ही 6 एवं 7 जुलाई को नवीन जैन मंदिर के शिलान्यास का मंगल आशीष प्रदान किया।

स्वाध्याय से आत्मा का कल्याण होता है

-आर्यिका श्री महायशमति माताजी

बांसवाड़ा। आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज का संघ कमर्शियल कॉलोनी बांसवाड़ा में संघ सहित विराजित है। आचार्य श्री की शिष्या आर्यिका श्री महायशमति माताजी ने उपदेश में स्वाध्याय क्यों किया जाता है, स्वाध्याय का जीवन में क्या लाभ है, स्वाध्याय से जीवन में क्या परिवर्तन आता है, इस पर अपना उपदेश दिया। माताजी ने प्रवचन में बताया कि स्वाध्याय करने के बिना जीवन अधूरा है। स्वाध्याय का शाब्दिक अर्थ देखें तो आत्मा में ज्ञान की प्राप्ति होना स्वाध्याय है। आत्मा जो राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ, पंचेंद्रीय विषय भोगों कर्मों से बंधी है। आत्मा से कषाय और कर्म कैसे कम हो, कैसे कर्मों का नाश हो यह स्वाध्याय करने से प्राप्त होता है। स्वाध्याय से आत्मा का कल्याण होता है। संसारी प्राणी का जीवन कष्ट और दुख में है वह सुख की खोज कर रहे हैं। भगवान के उपदेश को जीवन में नहीं उतार रहे हैं। स्वाध्याय से आत्मा में ज्ञान की प्राप्ति होती है इससे जीवन में परिवर्तन होता है इसलिए आगम प्रणीत प्राचीन ग्रंथ जो पूर्वाचार्य ने लिखे हैं उनका प्रतिदिन स्वाध्याय करना चाहिए।

आज के मानव का जीवन समाचार पत्र और मोबाइल से होता है। इनमें मोबाइल देखने, समाचार देखने, पढ़ने से आत्मा का कल्याण नहीं होता है। आत्मा का कल्याण धार्मिक ग्रंथों के स्वाध्याय से होता है। स्वाध्याय से भेद विज्ञान प्राप्त होता है कि आत्मा अलग है, शरीर अलग है। स्वाध्याय से मन पर नियंत्रण होता है।

-राजेश पंचोलिया, इंदौर

प्लास्टिक पर्यावरण एवं जानवरों का सबसे बड़ा शत्रु

- आचार्य श्री निर्भय सागर जी महाराज

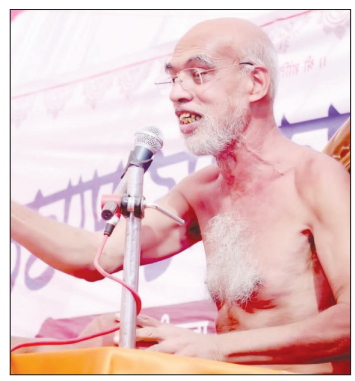

विश्व पर्यावरण दिवस की शुरुआत 05 जून 1974 से की गई, इस वर्ष भूमि को पुर्न जीवित करने के लिए मरुस्थली को रोकने, भूमि बहाली अर्थात छतिग्रस्त भूमि को व्यवस्थित करने, उन पर वृक्षारोपण करके एवं कार्बनडाइऑक्साइड के साथ प्लास्टिक से हो रहे पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए विशेष ध्यान दिया जायेगा, यह बात आचार्यश्री निर्भयसागर जी महाराज ने श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मन्दिर उदासीन आश्रम में कही। आचार्यश्री ने कहा कि प्लास्टिक पर्यावरण एवं जानवरों का सबसे बड़ा शत्रु है क्योंकि प्लास्टिक कभी पर्यावरण में विघटित नहीं होता। वह जमीन, तालाब एवं समुद्रों में जाकर लकड़ी, पत्ते, कागज आदि की तरह गलकर मिट्टी नहीं बनता बल्कि जमा रहता है। प्लास्टिक में रखी वस्तु जल्दी खराब होती है। प्लास्टिक जब अल्ट्रावाइलेट के सम्पर्क में आता है तब ग्रीन हाउस गैस निकलती है जो समस्त प्राणियों के लिए हानिकारक होती है। प्लास्टिक के इस्तेमाल से शीशा, केडमियम और पारा जैसे अनेक रसायन मानव शरीर के सम्पर्क में आते है जो जहरीले होते है जिससे केंसर, जन्मजात विकलांगता आदि पैदा करते है और शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को नष्ट करता है। प्लास्टिक में अपघटन और सरंध्रता का गुण ना होने से पर्यावरण की प्रतिकूल है।

वर्तमान में कैंसर, विकलांगता, प्रतिरोधक क्षमता की कमी देखने में आ रही है वह प्लास्टिक के अधिक उपयोग से हो रही है क्योंकि आज पाइप लाइन, दवाईयों के डिब्बे डिब्बीयां, खाद्य पदार्थों में प्लास्टिक थैलियों का उपयोग भरपूर मात्रा में हो रहा है जिसे डिस्पोजल भी कहते हैं। सरकार को प्लास्टिक डिस्पोजल पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाना चाहिए तभी पर्यावरण दिवस मनाना सार्थक होगा। आचार्यश्री ने बनने वाली मोदी की नयी सरकार को आशीर्वाद देते हुए यही भावना की है कि नयी सरकार इस डिसपोजल पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाये और कांच, कपड़ा, धातु के बर्तन को प्रचलन में लाये। पर्यावरण के प्रति प्रेम जगाये। अपना जीवन बचाये, सब जीवों पर प्रेम लुटाये। धन का बंटवारा करते हो परन्तु प्रेम का बटवारा भी करें। प्रेम सिर्फ इंसान ही नहीं पशु पक्षी भी चाहते हैं। प्रेम के ढाई अक्षर परमात्मा से मिला देते हैं।

बड़ौत में होगा त्रय मुनिराजों का पावन चातुर्मास

आचार्य विमर्श सागर जी महाराज संघ के त्रय मुनिराजों का बड़ौत के श्री अजितनाथ दिगंबर जैन मन्दिर मंडी बड़ौत में चातुर्मास होना सुनिश्चित हो गया है। तिजारा में आचार्य श्री विमर्श सागर जी महाराज ने, बड़ौत की श्री अजितनाथ दिगंबर जैन मन्दिर कमेटी को भरपूर आशीर्वाद देते हुए बड़ौत में अपने संघ के त्रय मुनिराजों के चातुर्मास की घोषणा की।

- वरदान जैन, बड़ौत

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92

Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on
Every Monday, wednesday and thursday

डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh,
Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233,
7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
.....
.....
.....

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-,
दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।